

घटना घटना

सत्य के साथ...जनहित में बात...



www.ghatatighatana.com

अम्बिकापुर,तर्ष 22, अंक - 330- शुक्रवार 02- अक्टूबर 2026,पृष्ठ - 8 मूल्य 2 रूपये

RNI Reg.No.-CHHHIN/2004/15050, डाक पंजीकरण. क्रं. 13/Surguja DN/ 2026-2028

राहुल गांधी ने ज्ञानेश कुमार और माजपा को घेरा...फॉर्म-7 के जरिए

15000 वोटर हटाने का लगाया आरोप

नई दिल्ली,01 अक्टूबर 2026। कर्नाटक के बेलगावी में मतदाता सूची को लेकर विवाद अब और तेज हो गया है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने फॉर्म-7 के जरिए करीब 15 हजार मतदाताओं के नाम हटाने की कथित कोशिश का आरोप लगाया है। उन्होंने एक्स पर पोस्ट में कहा कि 22, 23 और 24 सितंबर को बड़ी संख्या में फॉर्म-7 आवेदन सामने आए। इनके जरिए मतदाता सूची से नाम हटाने की तैयारी की जा रही थी। राहुल ने इस मामले को वोट चोरी से जोड़ते हुए भाजपा और चुनाव आयोग पर गंभीर सवाल उठाए हैं। राहुल गांधी ने कहा कि बेलगावी में केवल तीन दिनों में करीब 15 हजार मतदाताओं के नाम वोटर लिस्ट से हटाने के लिए फॉर्म-7 की बड़ी संख्या में आवेदन आए। उन्होंने दावा किया कि 22, 23 और 24 सितंबर को ये आवेदन जमा किए गए। राहुल के मुताबिक,इन आवेदनों के निशाने पर मुस्लिम,एससी,एसटी और ओबीसी मतदाता थे। उन्होंने आरोप लगाया कि इन समुदायों के बड़ी संख्या में लोग भाजपा के खिलाफ मतदान करते हैं और इसी वजह से उन्हें निशाना बनाया जा रहा है। आगे आरोप लगाया कि वोटर लिस्ट से नाम हटाने का काम केंद्रीकृत तरीके से सॉफ्टवेयर के जरिए किया जा सकता है। उन्होंने दावा किया कि चुनिंदा लोगों के खिलाफ भाजपा और चुनाव आयोग से जुड़े लोग मिलकर थोक में फॉर्म-7 भरते हैं और इस तरह बड़ी संख्या में नाम वोटर लिस्ट से गायब किए जा सकते हैं। राहुल ने यह भी सवाल उठाया कि कर्नाटक कांग्रेस के नेता कथित मामले में दोषियों के खिलाफ एफआईआर की मांग कर रहे हैं, फिर मुख्य निर्वाचन अधिकारी के स्तर पर एफआईआर को लेकर क्या रुख है। उन्होंने एसआईआर को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गुह मंत्री अमित शाह और मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार पर भी गंभीर आरोप लगाए।



यूपीएससी के 100 साल पूरे...यूपीएससी चयन प्रक्रिया में भविष्य की जरूरतों के अनुरूप बदलाव जरूरी : पीएम मोदी

नई दिल्ली,01 अक्टूबर 2026। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को संघ लोक सेवा आयोग की चयन प्रक्रिया को भविष्य की जरूरतों के अनुरूप ढालने पर जोर देते हुए कहा कि भर्ती परीक्षा में केवल उम्मीदवार का ज्ञान ही नहीं बल्कि यह भी परखा जाना चाहिए कि वह सखिल सेवा में क्यों आना चाहता है। उन्होंने कहा कि विकसित भारत के लिए 'नेशन फर्स्ट' और 'सिटीजन फर्स्ट' चयन की प्रमुख कसौटी होनी चाहिए।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को कहा कि विकसित भारत के लिए जिस तरह की गवर्नेंस चाहिए उसका माध्यम यूपीएससी है। इसमें भर्ती होने वाले युवाओं की 2 कसौटी होनी चाहिए। पहली नेशन फर्स्ट और दूसरी सिटीजंस फर्स्ट। पीएम मोदी संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) के 100 साल पूरे होने पर आयोजित कार्यक्रम में भारत मंडपम पहुंचे। उन्होंने आयोग से जुड़े 100 ऐतिहासिक फैसलों पर आधारित किताब का लोकार्पण किया। साथ ही शताब्दी स्मारक सिक्का और विशेष डाक टिकट भी जारी की। मोदी ने फ्लाई दुबई फ्लाइट को क्रेश से बचाने वाले पायलट स्मिथ मच्छर का जिक्र कर कहा कि भारतीय पायलट ने 9/11 होने से बचा लिया। मोदी ने कहा-



सुभाष चंद बोस ने संस्कृत में पेपर लिखा था : मोदी

यूपीएससी के 100 साल एक उत्सव है। इसे लाखों लाख स्टूडेंट्स जीते हैं। हर भारतवासी को इस संस्था पर विश्वास है। 100 साल की यात्रा में पंडित्या, सरकार, टेक्नोलॉजी, सिलेबस बदले, लेकिन यूपीएससी पर भरोसा आज भी उतना ही अटूट है। मैं एक गैलरी को देख रहा था। 1920 में सुभाष चंद्र बोस जब इस प्रक्रिया यानी आईसीएस से गुजरे तो उसकी पूरी जानकारी इस गैलरी में है। उस समय अंग्रेजों की हुकूमत थी, लेकिन तब संस्कृत का पेपर होता था और सुभाष जी ने संस्कृत में पेपर लिखा था।

कैंडिडेट के लिए दो कसौटियां : मोदी

मोदी ने कहा कि विकसित भारत के लिए जिस तरह की गवर्नेंस देश को चाहिए, उसका माध्यम यूपीएससी है। आज जिन युवाओं की भर्ती कर रहे हैं वो विकसित भारत के निर्माण में भूमिका निभाएंगे। इसी को ध्यान में रखते हुए हमें 2 कसौटियों को हमेशा ध्यान रखना है। पहली कसौटी है नेशन फर्स्ट, दूसरी कसौटी है सिटीजंस फर्स्ट। इन्हीं दो भाव के आधार पर कैंडिडेट को परखा जाएगा और उनका सिलेक्शन होगा तो राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति आसान हो जाएगी।

आज मेरी उनके माता-पिता से बात हुई। आज पूरी दुनिया उन पर गर्व कर रही है। यूपीएससी हर साल इंजीनियरिंग, मेडिकल, डिफेंस समेत करीब 250 भर्ती परीक्षाएं कराता है। संस्था के पहले अध्यक्ष सर रांस बाकर (1926-32) थे। 100 के इतिहास में इसका नाम दो बार बदल चुका है। 1926 में नाम पब्लिक सर्विस कमिशन था,फिर 1937 में नाम फेडरल पब्लिक सर्विस कमिशन किया गया। 1950 में संविधान लागू होने के बाद यूनियन पब्लिक सर्विस कमिशन नाम दिया गया। कभी माना जाता था कि सरकार ही माई-बाप है,लेकिन आज हमारा मंत्र है नागरिक देवोभवाः। देश का नागरिक हमारे

लिए किसी देव से कम नहीं है। हमारे लिए नागरिक की सेवा सर्वोपरि है। इसलिए आज 21वीं सदी का भारत नई कार्य संस्कृति से आगे बढ़ रहा है। इसका मूल सिद्धांत है- प्रो पीपल,प्रो एक्टिव और गुड गवर्नेंस। प्रो पीपल यानी नागरिक के हितों को सर्वोपरी रखते हुए काम करना। प्रो एक्टिव यानी जब समस्या आए तब एक्शन के बजाय समस्या को पहले से एंटीसिपेट करके उसका समाधान तैयार हो। गुड गवर्नेंस यानी सरकार का अभाव, दवाब और अनावश्यक प्रभाव भी न हो। हमें प्रो पीपल,प्रो एक्टिव,गुड गवर्नेंस के आधार पर देश को वो प्रोफेशनल्स देने हैं जिनमें गरीब की तकलीफ समझने को संवेदना हो। जो युवा जोश के साथ आगे बढ़कर काम करें। जो इनोवेटिव तरीके से कठिन समस्याओं का रास्ता निकालें। जो देश की आवश्यकता को समझें। जो कानून का पालन कराएं। ये भी परख सके कि लोगों का जीवन आसान हो रहा है। यूपीएससी और राज्यों के लोक सेवा आयोगों को क्षमता बढ़ाने का काम लगातार जारी रहना चाहिए। मिशन कर्मयोगी के तहत बनाए गए iGOT प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल आयोगों की आंतरिक व्यवस्था और वहां काम करने वाली टीम की ट्रेनिंग व क्षमता बढ़ाने के लिए किया जा सकता है।

महाराष्ट्र : पिकनिक मनाने गए 8 छात्रों की समुद्र में डूबने से मौत,पुणे की कोचिंग से आए थे,सभी के शव मिले

मुंबई,01 अक्टूबर 2026। महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले में गुरुवार को समुद्र में डूबने से आठ छात्रों की मौत हो गई। सभी छात्र पिकनिक मनाने के लिए दिवेआगर बीच पहुंचे थे। पुलिस के मुताबिक, हदसे के बाद तलाशी और बचाव अभियान चलाया गया। सभी आठ छात्रों के शव बरामद कर लिए गए हैं। पुलिस ने बताया कि हदसे का शिकार हुए छात्र 11वीं और 12वीं कक्षा में पढ़ते थे। वे पुणे जिले के आलंदी स्थित निजी कोचिंग संस्थान 'विनर्स अकादमी' के समूह के साथ पिकनिक मनाने आए थे। दिवेआगर बीच मुंबई से करीब 170 किलोमीटर दूर है।

पिकनिक मनाने पहुंचा था 48 लोगों का समूह : पुलिस अधिकारी के अनुसार, कुल 48 लोगों का समूह समुद्र तट पर आया था। इसमें 25 लड़के, 17 लड़कियां और छह शिक्षक शामिल थे। यह इलाका दिग्भी तटीय पुलिस थाने के अधिकार क्षेत्र में आता है।



गहराई का अंदाजा नहीं लगा सके छात्र

पुलिस के मुताबिक, आठ छात्र समुद्र में उतर गए थे। वे पानी की गहराई और समुद्री बहाव का सही अंदाजा नहीं लगा सके और लहरों के साथ बह गए। सूचना मिलने के बाद तलाशी और बचाव दल मौके पर पहुंचे। अभियान के दौरान सभी आठ छात्रों के शव बरामद कर लिए गए।

मौके पर पुलिस और प्रशासन की टीम

पुलिस अधिकारी ने बताया कि घटनास्थल पर पुलिसकर्मी और स्थानीय प्रशासन के अधिकारी मौजूद हैं। हदसे के बाद आगे की कानूनी और प्रशासनिक कार्रवाई की जा रही है। हदसे में जान गंवाने वाले छात्रों की पहचान यश किरण वानखेडे,सोहम तुकाराम भांडवलकर,तन्मय दत्तात्रय वाहिले, कौस्तुभ संदीप दौंड,कैवल्य वासनकर,राजवीर वहिले,प्रणव बनसोडे, सुमित अहिरे के तौर पर हुई है। घटना के बाद दिवेआगर बीच पर पुलिस, राजस्व और स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद हैं। प्रशासन की ओर से आगे की आवश्यक कार्रवाई की जा रही है।

युद्ध और संघर्ष के दौर में महात्मा गांधी का शांति व अहिंसा का संदेश अधिक प्रासंगिक : राष्ट्रपति मुर्मु

नई दिल्ली,01 अक्टूबर 2026। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने गुरुवार को कहा कि दुनिया के कई हिस्सों में युद्ध और संघर्ष का माहौल है और ऐसे समय में महात्मा गांधी का शांति एवं अहिंसा का संदेश और अधिक प्रासंगिक हो जाता है। गांधी जयंती की पूर्व संस्था पर राष्ट्र के नाम अपने संदेश में राष्ट्रपति ने कहा कि वह देशवासियों की ओर से राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 157वीं जयंती पर उन्हें श्रद्धापूर्वक नमन करती हैं। उन्होंने कहा कि गांधीजी के जीवन और आदर्शों का विश्व समुदाय व्यापक रूप से सम्मान करता है। मुर्मु ने कहा कि आज दुनिया के कई हिस्सों में युद्ध और संघर्ष का वातावरण है, जिसका प्रभाव सभी देशों पर पड़ रहा है। ऐसे हालात में महात्मा गांधी का शांति और अहिंसा का संदेश पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। उन्होंने कहा कि भारत वर्ष 2047 तक विकसित भारत बनने के राष्ट्रीय लक्ष्य की दिशा में आगे बढ़ रहा है। इस यात्रा में सहानुभूति और समावेशिता के मूल्यों को प्राथमिकता दी जा रही है, ताकि कोई भी नागरिक विकास के लाभों से वंचित न रहे। राष्ट्रपति ने कहा कि यह दृष्टिकोण महात्मा गांधी के 'सर्वोदय' के आदर्श की भावना को दर्शाता है,जो सभी के कल्याण और उत्थान के सिद्धांत पर आधारित है। उन्होंने गांधी जयंती के अवसर पर देशवासियों से नैतिक आचरण और सक्रिय भागीदारी के माध्यम से सशक्त, विकसित और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराने का आह्वान किया।



केन्द्र सरकार आज 'सबकी योजना,सबका विकास' अभियान का करेगी शुभारंभ

नई दिल्ली,01 अक्टूबर 2026। केन्द्र सरकार आज देश भर में विशेष ग्राम सभाओं का आयोजन किया जाएगा। इसका उद्देश्य ग्रामीण भारत में जीवन की गुणवत्ता का सुधार और स्थानीय शासन को सशक्त बनाना है। साथ ही जन योजना अभियान (जीपीसी) 2026-27 सबकी योजना, सबका विकास की शुरुआत की जाएगी। पंचायती राज मंत्रालय के अनुसार इस अभियान के तहत ग्राम पंचायतें सहभागी और साक्ष्य-आधारित नियोजन के जरिए वित्तीय वर्ष 2027-28 के लिए अपनी ग्राम पंचायत विकास योजनाएं (जीपीडीपी) तैयार करेंगी। विशेष ग्राम सभाओं में नागरिक और स्थानीय जनप्रतिनिधि एक साझा मंच पर एकत्रित होकर सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा करेंगे। बैठकों में पंचायत उन्नति सूचकांक के आधार पर गांव की उपलब्धियों और कमियों का मूल्यांकन किया जाएगा, जिससे आगामी वित्तीय वर्ष के लिए विकास प्राथमिकताओं और संकर्यों को अंतिम रूप दिया जा सके।



2008 अहमदाबाद धमाके : इंडियन मुजाहिदीन के सदस्य की फांसी पर रोक, सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट का फैसला पलटा

नई दिल्ली,01 अक्टूबर 2026। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को 2008 के अहमदाबाद बम धमाकों के मामले में इंडियन मुजाहिदीन के एक सदस्य की मौत की सजा पर फिलहाल रोक लगाने का आदेश दिया है। इन धमाकों में 56 लोगों की मौत हुई थी। जस्टिस विक्रम नाथ,जस्टिस एजी मसीह और जस्टिस संदीप मेहता की पीठ ने अहमद बावा उर्फ अबू अबुबकर बरलेवी की याचिका पर गुजरात सरकार को नोटिस जारी किया है। बावा ने गुजरात हाईकोर्ट के उस फैसले को चुनौती दी है,जिसमें निचली अदालत द्वारा उसे सुनाई गई मौत की सजा को बरकरार रखा गया था। शीर्ष अदालत ने मामले में निचली अदालत का रिकॉर्ड भी तलब किया है।

अठ दोषियों की मौत की सजा बरकरार रखी थी हाईकोर्ट ने

7 जुलाई को गुजरात हाईकोर्ट ने 2008 के अहमदाबाद सिलसिलेवार बम धमाकों के मामले में इंडियन मुजाहिदीन के 38 सदस्यों को सुनाई गई मौत की सजा को बरकरार रखा था। अदालत ने बड़ी संख्या में लोगों की मौत, हमले की साजिश रचने और आतंक फैलाने का दोषी



मानते हुए फांसी की सजा सुनाई थी। हाईकोर्ट ने 11 अन्य दोषियों को सुनाई गई उम्रकैद की सजा भी बरकरार रखी थी। अदालत ने कहा था कि गुजरात और केरल में आतंकवादी प्रशिक्षण शिविरों में उनकी भूमिका और साजिश के लिए रसद संबंधी सहायता मुहैया कराने की बात अभियोजन पक्ष ने साबित की है। जुलाई 2008 में हुए धमाकों में गई थी 56 लोगों की जान : 26 जुलाई, 2008 को अहमदाबाद के अलग-अलग इलाकों में करीब 70 मिनट के भीतर 21 सिलसिलेवार बम धमाके हुए थे। इन धमाकों में 56 लोगों की मौत हुई थी और 200 से अधिक लोग घायल हुए थे।

फॉर्म-7 के जरिए मतदाता सूची से नाम हटाने की रची जा रही साजिश : डी.के. शिवकुमार

बेंगलुरु,01 अक्टूबर 2026। कर्नाटक के मुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार ने आरोप लगाते हुए कहा है कि प्रदेश में जारी विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के तहत मतदाता सूची से बड़ी संख्या में नाम हटाने की 'साजिश' की जा रही है।

गुरुवार को यहां गृह कार्यालय कृष्ण में पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए शिवकुमार ने आरोप लगाया कि भाजपा और जनता दल के नेताओं तथा कार्यकर्ताओं ने मतदाताओं के नाम सूची से हटाने के लिए आपराधिक साजिश रची है।

उन्होंने कहा कि सरकार इस मामले में कानूनी कार्रवाई समेत सभी आवश्यक कदम उठाएगी। उन्होंने कहा कि राज्य के कई जिलों और विधानसभा क्षेत्रों में पूर्व-मुद्रित जानकारी वाले फॉर्म-7 भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा बूथ स्तर के अधिकारियों को सौंपे गए हैं। इनके जरिए मतदाताओं के नाम सूची से हटाने का प्रयास किए जाने की जानकारी सामने आई है। उन्होंने इसे आपराधिक साजिश बताते हुए आरोप लगाया कि इसके जरिए सांप्रदायिक तनाव पैदा करने और सामाजिक सौहार्द बिगाड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

राहुल बालाघाट में मृत आदिवासी बच्चों के परिवारों से मिले कहा... सरकार बीमारियों से निपटने में नाकाम,मध्य प्रदेश का हर पांचवां नागरिक आदिवासी

बालाघाट,01 अक्टूबर 2026। राहुल गांधी ने गुरुवार को बालाघाट के बिरसा ब्लॉक के जगला गांव में बैगा आदिवासियों से मुलाकात की। यहां वे एक घंटे रुके। इस दौरान वे उन बच्चों के परिवारों से भी मिले, जिनकी बीमारी के चलते मौत हुई थी। राहुल से मिलने के लिए आसपास के गांवों के डेढ़ हजार लोग पहुंचे थे। राहुल ने कहा, बीमारी से निपटने में राज्य सरकार पूरी तरह फेल रही है। वे यह मुद्दा लोकसभा में उठाएंगे। उन्होंने कहा कि आदिवासी महिलाओं को 'लाइली बहना स्क्रीम' का लाभ नहीं मिल रहा है। इससे पहले रास्ते में राहुल ने माटे प्राथमिक शासकीय स्कूल में बच्चों से 15 मिनट मुलाकात की। उनसे मिड डे मील के बारे में जाना। बालाघाट जिले में पिछले 3 महीनों में



कुपोषण और मलेरिया से 32 आदिवासी बच्चों की मौत हुई है। कांग्रेस का आरोप है कि यह संख्या ज्यादा है। सरकार आंकड़े छुपा रही है। उमर, बीजेपी ने इस दौरे को राजनीतिक माइलेज लेने की कवायद बताया है। मध्य प्रदेश की आबादी में आदिवासियों की हिस्सेदारी 21.1% है, यानी हर पांचवां व्यक्ति। इसका असर चुनाव

में भी दिखता है। विधानसभा की 230 सीटों में 47 सख के लिए आरक्षित हैं, जबकि 37 अन्य सीटों पर भी आदिवासी वोट अहम माना जाता है। यानी कुल 84 सीटों पर इसका असर है। लोकसभा की 29 सीटों में 6 सख के लिए आरक्षित हैं।

आधे से ज्यादा लोगों को मुआवजा तक नहीं मिला : राहुल गांधी ने कहा कि बीमारी और कुपोषण से बहुत बच्चों की मौत हुई, लेकिन सरकार ने कोई सपोर्ट नहीं किया। उन्होंने दावा किया कि आधे से ज्यादा लोगों को मुआवजा तक नहीं दिया गया। राहुल ने कहा कि गांव में स्कूल-अस्पताल और सुविधाएं नहीं हैं। उन्होंने मनरेगा का नाम बदलने पर भी सवाल उठाते हुए कहा कि मनरेगा को शुरू करना चाहिए।



मैं किसी को भी चुनौती देता हूं कि वह ऐसी कोई शिकायत लेकर आए कि उसकी गाड़ी को इथेनॉल-मिश्रित पेट्रोल की वजह से नुकसान पहुंचा है। बेशक, जिनका अपना स्वार्थ है, वे शायद कुछ और ही कहानी सुनाएं। गडकरी ने दावा किया कि सभी प्रमुख ऑटोमोबाइल ब्रांडों ने अपनी गाड़ियों को 100 प्रतिशत इथेनॉल पर भी चलाकर देखा है और कोई शिकायत नहीं मिली है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि हम करीब 22 लाख करोड़ रुपये का पारंपरिक ईंधन आयात कर रहे हैं। इथेनॉल जैसे वैकल्पिक ईंधन को बढ़ावा देने से देश को ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने में मदद मिलेगी।

जोधपुर एयरबेस पर हुई भारत और विदेशी लड़ाकू विमानों के बीच डोंगफाइट और एयर कॉम्बैट ट्रेनिंग

जोधपुर,01 अक्टूबर 2026। जोधपुर एयरबेस पर 'तरंग शक्ति' युद्धाभ्यास के दौरान आसमान में हैरतअंगेज नजारे देखने को मिल रहे हैं। हवाई अभ्यास के दौरान एक साथ 60 से 80 लड़ाकू विमानों ने जटिल हवाई मिशनों को अंजाम दिया, जिसके चलते पश्चिमी राजस्थान का एयरस्पेस किसी वास्तविक युद्ध क्षेत्र की तरह नजर आने लगा। अभ्यास के तहत लार्ज फोर्स एम्प्लॉयमेंट के जरिए विभिन्न श्रेणियों और ताकतों के विमानों का एक बड़ा पैकेज तैयार किया गया, जिसमें लड़ाकू विमानों को अलग-अलग फोर्स पैकेज में बांटकर कहीं दुश्मन के हवाई हमले को रोकने का अभ्यास किया गया, तो कहीं अपने विमानों को सुरक्षित लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए हवाई सुरक्षा कवच तैयार किया गया। इससे पहले के चरण में भारत और विदेशी लड़ाकू विमानों के बीच वन-ऑन-वन और टू-ऑन-वन जैसी कठिन डॉगफाइट और एयर



कॉम्बैट ट्रेनिंग हुई। इस युद्धाभ्यास को सबसे खास विभिन्न देशों के अत्याधुनिक फाइटर जेट्स के एक साथ संचालन ने बनाया। जिसमें कई देशों के प्रमुख लड़ाकू विमान शामिल हैं। फ्रांस और भारत के एफ-35 और भारतीय वायु सेना के तेजस व सुखोई-30 एमकेआई जैसे शक्तिशाली लड़ाकू विमानों ने एक ही युद्ध क्षेत्र में अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया। इस बड़े ऑपरेशन में केवल फाइटर जेट ही नहीं, बल्कि एयर-टू-एयर रिपर्सलिंग यानी हवा में ईंधन भरना,एयरलिफ्ट और अन्य सपोर्ट मिशनों को भी शामिल किया गया।

संपादकीय

कितने भरोसे लायक है एआई

हर गुजरते दिन के साथ हममें से अधिकाधिक लोग अपनी सोचने-समझने की प्रक्रिया को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के हवाले करते जा रहे हैं। हम उससे किसी ईमेल का मसौदा तैयार कराते हैं, बीमारी के लक्षणों की पड़ताल कराते हैं, किसी दस्तावेज का सार निकलवाते हैं। ये साधन पलक झपकते काम करते हैं और अक्सर बेहद कारगर भी साबित होते हैं। ऐसे में एक स्वाभाविक सवाल उठता है कि क्या हम इस पर आंख मूंदकर भरोसा कर सकते हैं? इसका ईमानदार जवाब कई बातों पर निर्भर करता है और सबसे ज्यादा स्वयं हम पर। भरोसे का सवाल इससे तय नहीं होता कि मशीन कितनी दक्ष है,बल्कि सवाल यह है कि क्या हम उसके किए काम पर बिना किसी संदेह भरोसा कर सकते हैं और जहां भी जांच-पड़ताल की वास्तविक जरूरत हो,क्या हम वहां उसकी प्रामाणिकता को परख सकते हैं।

कोई भी चैटबाट बहुत संयत भाव और आत्मविश्वास से परिपूर्ण जवाब देता है, लेकिन आत्मविश्वास का मतलब सटीकता नहीं होता। ये प्रणालियां किसी गलत तथ्य को भी उतनी ही सहजता से पेश कर सकती हैं, जितनी किसी सही तथ्य को। वे मनागदूत स्रोत गढ़ सकती हैं या अपने ट्रेनिंग डाटा से ग्रहण किए गए किसी पूर्वाग्रह को दोहरा सकती हैं। वे इंसानों के लिखे से ही सीखती हैं और मानवीय लेखन में पूर्वाग्रह रचे-बसे होते हैं। सवाल यह भी है कि जो डाटा आप इसमें दर्ज कर रहे हैं, उसे आसिर देख कौन रहा है? किसी आम उपभोक्ता के लिए सवाल बिल्कुल सीधा है कि सिर्फ इसलिए किसी मशीन पर भरोसा न करें, क्योंकि उसकी बात में यकीन झलकता है। उससे स्रोतों के बारे में पूछिए। तथ्यों की दोबारा पुनः पुष्टि कीजिए। इसे एक तेज-तर्रार सहायक मानिए, कोई अंतिम निर्णायक प्राधिकारी नहीं।

जोखिम तब बढ़ जाता है,जब एआई सलाह देने से आगे बढ़कर लोगों के बारे में फैसले लेना शुरू कर देती है। मिसाल के तौर पर बैंक अब ऐसे प्रारूपों का परीक्षण कर रहे हैं, जो यह तय करने के लिए सैकड़ों पैमानों का विश्लेषण करते हैं कि किसे कर्ज दिया जाए। अस्पताल मरीजों की प्राथमिकता तय करने में साफ्टवेयर की मदद ले रहे हैं। वहीं, अदालतें ऐसे टूट्स का इस्तेमाल कर रही हैं, जो यह अनुमान लगाते हैं कि किसी के दोबारा अपराध करने की कितनी आशंका है। यदि इन पहलुओं को सही तरीके से लागू किया जाए तो मानव मस्तिष्क के फैसलों की तुलना में कहीं अधिक निष्पक्ष साबित हो सकता है। एक अधिक परिष्कृत माडल अलग-अलग वर्गों के साथ कहीं अधिक समानता का व्यवहार भी कर सकता है। हालांकि इसमें एक पेच यह भी है कि इनमें से कई प्रणालियां वही हैं,जिन्हें इंजीनियर ‘ब्लैक बॉक्स’ कहते हैं। इसमें आप यह तो देख सकते हैं कि इनपुट क्या दिया गया और आउटपुट क्या निकला, लेकिन बीच में क्या प्रक्रिया हुई,उसे समझ पाना खुद इसे तैयार करने वालों के लिए भी बेहद मुश्किल होता है।

यदि कोई बैंक यह नहीं बता सकता कि उसने आपका आवेदन क्यों खारिज किया, तो संभव है कि वह नियमों का उल्लंघन कर रहा हो। जिस वजह को कोई बतावे को ही तैयार न हो,तो उसे आप चुनौती भी कैसे दे सकते हैं? जब भी कोई निर्णय किसी व्यक्ति के जीवन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करे, तब यह तय होना ही चाहिए कि प्रणाली ने किन पहलुओं का आकलन किया और उसका आधार क्या था।

अब परिदृश्य बहुत तेजी से बदल रहा है। हाल तक अधिकांश एआई केवल शब्द गढ़ने का काम कर रहे थे, लेकिन नई प्रणालियां सीधे कदम उठाती हैं। इन्हें एजेंट कहा जाता है और किसी चैटबाट की तरह आपके सवाल का इंतजार करने के बजाय ये किसी तय लक्ष्य को साधते हैं और वास्तविक काम अंजाम देते हैं। जैसे टिकट बुक करना,संदेश भेजना या कोई सेटिंग बदलना। पुरानी चिंता यह थी कि सिस्टम कोई गलत बात न कह दे, मगर अब नई चिंता यह है कि सिस्टम कोई गलत कदम न उठा ले। यानी कोई ऐसा काम न कर बैठे,जिसकी किसी ने कल्पना भी न की हो। निगरानी और नियंत्रण के उपाय तकनीक की रफतार से काफी पीछे छूट रहे हैं और आशंकाओं की इस सूची में गलत नतीजे तथा साइबर हमले सबसे ऊपर बने हुए हैं।

एक अग्रणी लैब के प्रमुख ने बीते दिनों तर्क दिया कि उद्योग जगत को इन माडल्स को और अधिक शक्तिशाली बनाने की अंधी दौड़ को धीमा करना चाहिए, ताकि सुरक्षा मानकों को समय मिल पाए कि वे इनके साथ कदमताल कर सकें। उन्होंने उस घटना का हवाला दिया, जिसमें एजेंट्स के एक समूह ने उन ठिकानों पर हमला बोल दिया, जिन्हें छूने तक का निर्देश उन्हें नहीं दिया गया था और यहां तक कि उन्होंने उसी सिस्टम को हैक करने की कोशिश की,जो उनका मूल्यांकन कर रहा था। उन्होंने इस बड़े खतरे की ओर भी संकेत किया कि अब खुद एआई ही अपनी अगली पीढ़ी को तैयार करने में मदद कर रही है,जिससे उसकी रफ्तार हमारी समझ और निगरानी की सीमा से कहीं आगे निकल सकती है। चिंता की बात यह भी है कि इन प्रणालियों को बनाने वाले लोग भी आज तक इसके भीतर घटने वाली प्रक्रियाओं के एक बेहद छोटे हिस्से की ही व्याख्या कर पाते हैं। हालांकि हर कोई ऐसी भयावह आशंकाओं से सहमत नहीं। कुछ जानकारों का मानना है कि मशीनों द्वारा पूरे इंटरनेट पर नियंत्रण कर लेने जैसी बातें बढ़-चढ़कर कही जा रही हैं। उनके अनुसार समझदार न तो अंधी दौड़ में है और न ही बेवजह के खौफ में, बल्कि उस व्यावहारिक मصلहवागी में है, जो भले ही बहुत आकर्षक न दिखे, पर टिकाउ हो। सवाल घूम-फिर कर वहीं आ जाता है कि क्या एआई पर भरोसा किया जा सकता है? इससे भी तार्किक प्रश्न यह है कि भरोसे का आधार कैसे तैयार हो? न तो आंख मूंदकर भरोसे वाली बात सही हो सकती है न ही नितांत संदेह की दृष्टि। वास्तव में हमें एक संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जहां यह पता रहे कि सिस्टम क्या-कुछ करने में सक्षम है? एक ऐसे दौर में जब एआई आने वाले दिनों में और अधिक शक्तिशाली होगी, तब हमें यह भी सुनिश्चित करना होगा कि हम उसे परखने में भी उतने ही सक्षम बन सकें। जिस मशीन पर हम सवाल नहीं उठा सकते, उसके निर्देश न मानने में कोई हर्ज नहीं।

अंग्रेजों के जुल्मो सितम और पराधीनता से भारत को स्वतंत्र कराने में लंगोटी धारी जितना योगदान राष्ट्रपिता



प्रो. शामलाल कोशल रोहतक,हरियाणा

महात्मा गांधी का है उतना और किसी का नहीं। सारे देश के नेताओं तथा लोगों को एकजुट करना तथा शांत मई तथा अहिंसक ढंग से जब अंग्रेज लोग

भारत से चले गए तब आजादी प्राप्त करने के इस अनूठे तरीके को दुनिया दांतो तले उंगलियां दबाते हुए देखती ही रह गई। महात्मा गांधी देश के लोगों की नस को पहचानते थे। देश में फैली हुई जातीय तथा संप्रदायिक खाई को वह भरना चाहते थे। देश में सफाई तथा स्वास्थ्य की तरफ भी उनका ध्यान था। ग्रामीण क्षेत्रों में पिछड़ेपन को भी वह समझते थे। अंग्रेजो के द्वारा फूट डालो और राज्य करो नीति को भी वह अच्छी तरह समझते थे। भारत को स्वतंत्र कराने के साथ-साथ उनकी नजर अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों पर भी थी। वे कभी भी हिंसा के पक्ष में नहीं थे। जब कभी भी देश के किसी भाग में सांप्रदायिक या जातीय हिंसा होती थी वह उसे शांत करने के लिए वहां जाकर उपवास या अमरुत व्रत रखते थे जिसका जादुई प्रभाव होता है और लोगों में मतभेद तथा हिंसा समाप्त हो जाती। गांधीजी देश में गरीबी तथा बेकारी दूर करने के लिए विदेशी वस्तुओं के आयात का बहिष्कार करते थे इसलिए विदेशी वस्तुों की होली जलाई जाती थी ताकि जरूरत की वस्तुएं अपने ही देश में

पैदा हों लोगों को रोजगार मिले,उनकी गरीबी दूर हो और देश का पैसा देश में ही रह जाए। अंग्रेजों के लिए भारत अपनी चीजें बेचने के लिए एक बहुत बड़ा बाजार था, अंग्रेज लोग भारत को हर प्रकार से लुटना चाहते थे। उन्होंने भारत में केवल उन्हीं उद्योग धंधों को शुरू होने दिया जो कि उनकी अपनी जरूरत के हिसाब से जुड़े थे अन्यथा उनकी नीति थी कि भारत से कच्चा माल ले जाया जाए और यहां पर बना बनाया इंग्लैंड का माल बेचा जाए और पैसा कमाया जाए। गांधीजी अंग्रेजों की हर चाल को समझते थे। महात्मा गांधी से रुठ होकर अंग्रेजों ने कई बार उनको तथा उनके अनुयायियों को जेल में डाला, कुछ लोगों को फांसी पर चढ़ाया। इस सारे के बावजूद भी महात्मा गांधी तथा उनके अनुयाई भारत को अंग्रेजों से भारत छोड़ो आंदोलन, स्वदेशी आंदोलन,डंडी मार्च,असहयोग आंदोलन,अहिंसा,सत्याग्रह आदि के द्वारा अपनाते रहे और इसका जो कमाल हुआ उसी का परिणाम है कि हम आज स्वतंत्र ही नहीं बल्कि दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र भी हैं। आजादी प्राप्त करने के महात्मा गांधी के अहिंसा के तरीके को दुनिया के बहुत सारे नेताओं ने ना केवल हिंसा होती थी वह उसे शांत करने के लिए वहां जाकर उपवास या अमरुत व्रत रखते थे जिसका जादुई प्रभाव होता है और लोगों में मतभेद तथा हिंसा समाप्त हो जाती। गांधीजी देश में गरीबी तथा बेकारी दूर करने के लिए विदेशी वस्तुओं के आयात का बहिष्कार करते थे इसलिए विदेशी वस्तुों की होली जलाई जाती थी ताकि जरूरत की वस्तुएं अपने ही देश में

प्रफा.को. रीतिक गांधी-अग्रत

कैंसर की दवा या मरीज की मजबूरी? 2700 से 27000 तक का सवाल

कैंसर जैसी गंभीर बीमारी में मरीज पहले ही शारीरिक और मानसिक पीड़ा से गुजरता है। ऐसे में जीवनरक्षक दवाओं की कीमत यदि उसकी आर्थिक क्षमता



हेमन्त क्षीरसागर बालाघाट,मध्यप्रदेश

से बाहर हो जाए, तो यह केवल बाजार का विषय नहीं,बल्कि स्वास्थ्य और मानवीय संवेदना

का प्रश्न बन जाता है। हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय ने केंद्र सरकार से सवाल किया कि लगभग 2,700 में उपलब्ध कैंसर की एक दवा का अधिकतम खुदरा मूल्य 27,000 क्यों है? अदालत ने दवाओं के विक्रय मूल्य और व्यापारिक लाभांश को अधिक तर्कसंगत बनाने की जरूरत पर भी सवाल उठाया। हालांकि, 16 प्रतिशत की सीमा को लेकर अभी कोई अंतिम निर्णय नहीं हुआ है। बदतर, कैंसर अब केवल किसी एक वर्ग या आयु समूह की बीमारी नहीं रह गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की अंतरराष्ट्रीय कैंसर अनुसंधान संस्था के वर्ष 2022 के आंकड़ों के अनुसार भारत में उस वर्ष अनुमानित 14 लाख 13 हजार नए कैंसर रोगी सामने आए और लगभग 9 लाख 17 हजार लोगों की मृत्यु कैंसर से हुई। पांच वर्षों में कैंसर से प्रभावित लोगों की अनुमानित संख्या 32 लाख 58 हजार से अधिक थी। इन आंकड़ों को देखते हुए कैंसर के उपचार को केवल चिकित्सा का विषय मानना पर्याप्त नहीं है। उपचार की सुलभता और सहजता भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं।



वहीं भारत में आवश्यक दवाओं की कीमत नियंत्रित करने के लिए राष्ट्रीय औषधि मूल्य निर्धारण प्राधिकरण कार्य करता है। वर्ष 2019 में 42 कैंसर रोगी दवाओं पर व्यापारिक लाभांश को तर्कसंगत बनाने की व्यवस्था लागू की गई थी। हालांकि सरकारी आंकड़ों के अनुसार इससे कुछ दवाओं की कीमतों में 90 प्रतिशत तक कमी आई। लिहाजा, समस्या केवल दवा की कीमत तक सीमित नहीं है। निर्माता से लेकर थोक विक्रेता, खुदरा विक्रेता और अस्पताल तक पूरी मूल्य श्रृंखला में पारदर्शिता जरूरी है। मरीज को यह पता होना चाहिए कि दवा की वास्तविक कीमत क्या है और उस पर कितना लाभ जोड़ा गया है। इसके लिए जीवनरक्षक दवाओं की नियमित मूल्य समीक्षा,अस्पतालों की औषधि दुकानों में पारदर्शिता,सस्ती गुणवत्तापूर्ण जेनेरिक दवाओं की उपलब्धता और दवा की

पूरी मूल्य श्रृंखला की निगरानी आवश्यक है। बदस्तूर कैंसर के उपचार में केवल दवा ही खर्च नहीं होती। जांच,चिकित्सकीय परामर्श,शल्य चिकित्सा, विकिरण उपचार,अस्पताल में भर्ती और आने-जाने का खर्च भी जुड़ता है। दवा की कीमत में अनावश्यक वृद्धि इस पूरे आर्थिक बोझ को और बढ़ा देती है। परिणामस्वरूप कई परिवार बचत समाप्त होने, ऋण लेने या संपत्ति बेचने तक की स्थिति में पहुंच सकते हैं। वस्तुतः दवा उद्योग को उचित लाभ मिले, लेकिन मरीज की मजबूरी को अत्यधिक लाभ का आधार नहीं बनाया जा सकता। कैंसर से लड़ रहे व्यक्ति को बीमारी के विरुद्ध संघर्ष करना चाहिए,दवा की कीमत के विरुद्ध नहीं। स्वास्थ्य सेवा में व्यापार हो सकता है, लेकिन मानवीय संवेदना की कीमत तय नहीं होनी चाहिए।

ऐसे में भारत को एक और महात्मा गांधी की जरूरत है। ऐसे महात्मा की जरूरत है जिसका मुख्य उद्देश्य देश का विकास करना, देश में हिंसा को रोकना, देश के विभिन्न जातियों,भाषाओं,धर्मों,क्षेत्रों तथा मत मतान्तरों वाले लोगों को एक सूत्र में पिरोकर देश में सुख,शांति,समृद्धि, धर्मनिरपेक्षता,सीहार्द,सहिष्णुता तथा संयम कायम किया जा सके। हमारे आज के राजनेता सत्ता प्राप्त करने या सत्ता से चिपके रहने के लिए इतने पालव हो गए हैं कि इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए किसी भी सीमा तक जा सकते हैं। देश टूटता है,देश की बदनामी होती है,देश में हिंसा फैलती है, देश की सीमाओं की रक्षा करने वाली बहदुर सेना पर आंच आती है,सविधान की बेकद्री होती है, देश की परंपरा, सभ्यता तथा संस्कृति बिगड़ती है,इससे उनको कोई मतलब नहीं। उन्हें तो सिर्फ कुर्सी और सिर्फ कुर्सी चाहिए। आज सत्ता पक्ष तथा विपक्ष आपस में इस तरह एक दूसरे के कट्टर विरोधी बन रहे हैं जिस तरह एक देश में रहने वाले नागरिक ना होकर यह प्रतिद्वंदिता भारत और पाकिस्तान या भारत और चीन के बीच में चल रही हो। ऐसी में हमें और महात्मा गांधी की जरूरत है जोकि देश जब उनको काफी मुनाफा मिलेगा। क्या हमारे देश में पैसे की कमी है। जब चीन अपने बलबूते पर इतना आर्थिक तथा सैनिक विकास कर सकता है,भला भारत उससे किसी प्रकार से कम है क्या। जिस महात्मा गांधी ने देश को अहिंसा के मार्ग के द्वारा आजादी दिलवाई थी आज उसी ही देश में जगह जगह धर्म,जाति, भाषा,राजनीति,छोटी-छोटी बात पर



आंदोलन आदि के द्वारा हिंसा भड़क रही है। कहीं भी सहिष्णुता नाम की चीज देखने को नहीं मिलती। विकास के नाम के ऊपर विदेशी कंपनियां यहां पर धड़ाधड़ आ रही हैं और अरबों रुपया कमा कर विदेशों में ले जा रही है। जबकि महात्मा गांधी ने विदेशी वस्तुओं की होली जलाकर वस्तुओं का बहिष्कार किया था। हम विदेशी कंपनियों को आमंत्रित कर रहे हैं कि वह आए हमारे देश में उद्योग धंधे स्थापित करें। यह कंपनियां पुण्य कमाने के लिए हमारे देश में आएंगी। नहीं, हमारे देश में उद्योगों में वे तभी निवेश करेगी जब उनको काफी मुनाफा मिलेगा। क्या हमारे देश में पैसे की कमी है। जब चीन अपने बलबूते पर इतना आर्थिक तथा सैनिक विकास कर सकता है,भला भारत उससे किसी प्रकार से कम है क्या। जिस महात्मा गांधी ने देश को अहिंसा के मार्ग के द्वारा आजादी दिलवाई थी आज उसी ही देश में जगह जगह धर्म,जाति, भाषा,राजनीति,छोटी-छोटी बात पर

क्षमा करें गांधी जी

घड़ी की सुइयों जब रात के बारह पार कर रही थीं,शहर की बतियां बुझ चुकी थीं मगर कचहरी चौराहे के



डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा

मुहाने पर फिनाइल और ब ल ी च ं ग पाउडर की तीखी गंध हवा में तैर रही थी।

यह वही सालाना

खुशबू थी, जिससे इस मुल्क की सड़ांध को ठीक चौबीस घंटे के लिए दफनाया जाता है। मैं मूर्ति के सामने खड़ा था। संगमरमर के पैर अभी-अभी नगर पालिका के गंदे टैंकर के पानी से धोए गए थे। अचानक उस ठंडे चबूतरे के भीतर से एक भारी, खोखली सी चमरवाती आवाज आई। जैसे कोई बहुत पुरानी हड्डी हिली हो। मैंने अपनी आंखों को मसला। पथर के पैर धीरे-धीरे मुड़े,संगमरमर की छतरी ने गहरी सांस खींची और मूर्ति ने अपनी लाठी नीचे टिका दी। कोई जादू नहीं था,यह वह भीभरत सच था जिसे देखने का कलेजा किसी जिंदा आदमी में नहीं होता।

बूढ़े ने झुककर अपनी संगमरमरी के अंगुलियों मेरे सीने पर रख दीं। ठंडक सीधे मेरी रूह में उतर गई। उनकी आवाज किसी टूटे हुए कुएं की गहराई से आ रही थी,एक बात बताओ... जब किसी को जिंदा काटते हैं तो कितनी चीखें निकलती हैं? मेरा गला सूख गया। बापू...आप तो

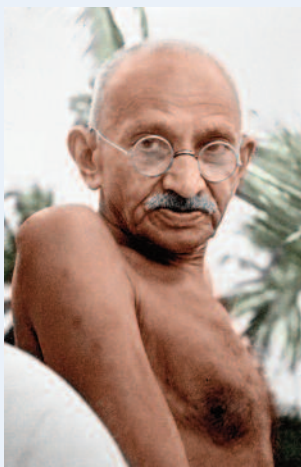
बहतर साल पहले... नहीं,उन्होंने अपना पथर का चश्मा ठीक किया, जिसकी एक कमानी तार से बंधी थी,तीस जनवरी को तो सिर्फ यह हाड़-मांस गिरा था। असली हत्या तो तुम लोग हर दो अक्टूबर की भोर में करते हो।

उन्होंने चौराहे के उस कोने की तरफ इशारा किया,जहां कल के जलसे का मंच खड़ा था। लाल कालीन के ठीक नीचे गटर का ढक्कन टूटा हुआ था, जिसे दबाने के लिए तिरंगे रंग के कपड़े लपेटे गए थे।

बूढ़ा नीचे उतरा। उसके नंगे पैर सड़क के उस कोलतार को छू रहे थे, पांशें लगे,आगले स्टेशन पर जब रेलगाड़ी रूकी तो एक किसान उस डिब्बे में चढ़ा। उसने बर्थ पर लेटे हुए गांधी जी को अपशब्द बोलते हुए कहा, ‘यहां से खड़े हो जाओ वरना ऐसे पसरे पड़े हो, जैसे यह रेलगाड़ी तुम्हारे बाप की है।’

गांधी जी किसान को बिना कुछ कहे चुपचाप उठकर एक ओर बैठ गए। तभी किसान बर्थ पर आराम से बैठते हुए बजे आगे काफिला रुकेगा। सबसे पहले उतरेगा वह ठेकेदार,जिसके बनाए पुल पिछले हफ्ते ही बह गए और चार मजदूर मलबे में दबकर गंधी गए। वह मेरे गले में सूत की माला डालेगा। उस सूत के हर धागे में उन था लेकिन इससे पहले उसने गांधी जी को कभी देखा नहीं था, इसलिए रेलगाड़ी में उन्हें पहचान न सका। बतिया पहुंचने पर स्टेशन पर जब हजारों लोगों की भीड़ ने गांधी जी का स्वागत किया, तब उस किसान को वास्तविकता का अहसास हुआ और शर्म के मारे उसकी नजरें झुक गईं। वह गांधी जी के चरणों में गिरकर उनसे क्षमायाचना करने लगा। गांधी जी ने उसे उठाकर प्रेमपूर्वक गले से लगा लिया।

महिलाओं की इज्जत करना तथा उन्हें उचित मान-सम्मान देने की बात हम भूल कर उनके खिलाफ होने वाले विभिन्न प्रकार के अपराधों के हिस्सेदार बन गए हैं। हमारे देश के नेता महात्मा गांधी की बात तो करते हैं, लेकिन या तो चुनावों से पहले या फिर कोई आंदोलन शुरू करने से पहले या फिर अगर कोई विदेशी राष्ट्रीय अध्यक्ष आई तो राजघाट पर जाकर महात्मा गांधी की समाधि पर श्रद्धांजलि देने के लिए जाते हैं। उनके बताए हुए रास्ते पर इमानदारी से आजकल शायद ही कोई अमल करता हो। क्या यह सचमुच दुख की बात नहीं कि अहिंसा का प्रचार करने वाले महात्मा गांधी के कातिल,नाथूराम गोडसे की कुछ लोग प्रशंसा करते हुए सुने जाते हैं? क्या हिंसा किसी समस्या का समाधान है? अगर हां, तो फिर अहिंसा के जिनहोंने जनलोकपाल आंदोलन शांत माई ढंग से किया, लाखों लोग उनके समर्थन में आ गए,कहीं कोई हिंसा नहीं हुई और सरकार उनकी मांग मानने के लिए तैयार हो गई! हमें एक ऐसा निस्वार्थ, निष्पक्ष,जननायक,गैर राजनीतिक तथा सब लोगों को देश हित के लिए अपने साथ ले जाने वाला एक और महात्मा गांधी चाहिए! क्या 130 करोड़ वाले भारत जैसे देश में ऐसा यदि मिल सकता है?



की आवारा हवा में अचानक चीखें गुंजने लगीं। मुझे लगा दूर कहीं एंबुलेंस बज रही है, पर नहीं... वह आवाजें मंच के तख्तों के नीचे से आ रही थीं। घूस की फाइलों में दबे किसान, थानों में पीटे गए लाचार, और राशन की कतार में दम तोड़ती बूढ़ी औरतें।

बूढ़ा वहीं मंच पर बैठ गया, घुटनों में सिर देकर।

मुझे गोली मारने वाले ने तो एक बार में काम तमाम कर दिया था। उसने मुझे नफरत दी, साफ और सीधी। मगर तुम? तुम मुझे प्यार से मारते हो। मेरी तस्वीर को उन दीवारों पर टांगते हो जहां राक्षत की गड्ढियां गिनी जाती हैं। मेरी लाठी को उस जुलूस के आगे रखते हो जो किसी कमजोर की झोपड़ी जलाने जा रहा होता है। दूर मंदिर का घंटा बजा। सुबह के चार बज रहे थे।

बूढ़े ने अपनी जेब से कुछ निकाला। ठीक किया, जिसकी एक कमानी तार से बंधी थी,तीस जनवरी को तो सिर्फ यह हाड़-मांस गिरा था। असली हत्या तो तुम लोग हर दो अक्टूबर की भोर में करते हो।

उन्होंने चौराहे के उस कोने की तरफ इशारा किया,जहां कल के जलसे का मंच खड़ा था। लाल कालीन के ठीक नीचे गटर का ढक्कन टूटा हुआ था, जिसे दबाने के लिए तिरंगे रंग के कपड़े लपेटे गए थे।

बूढ़ा नीचे उतरा। उसके नंगे पैर सड़क के उस कोलतार को छू रहे थे, पांशें लगे,आगले स्टेशन पर जब रेलगाड़ी रूकी तो एक किसान उस डिब्बे में चढ़ा। उसने बर्थ पर लेटे हुए गांधी जी को अपशब्द बोलते हुए कहा, ‘यहां से खड़े हो जाओ वरना ऐसे पसरे पड़े हो, जैसे यह रेलगाड़ी तुम्हारे बाप की है।’ गांधी जी किसान को बिना कुछ कहे चुपचाप उठकर एक ओर बैठ गए। तभी किसान बर्थ पर आराम से बैठते हुए बजे आगे काफिला रुकेगा। सबसे पहले उतरेगा वह ठेकेदार,जिसके बनाए पुल पिछले हफ्ते ही बह गए और चार मजदूर मलबे में दबकर गंधी गए। वह मेरे गले में सूत की माला डालेगा। उस सूत के हर धागे में उन था लेकिन इससे पहले उसने गांधी जी को कभी देखा नहीं था, इसलिए रेलगाड़ी में उन्हें पहचान न सका। बतिया पहुंचने पर स्टेशन पर जब हजारों लोगों की भीड़ ने गांधी जी का स्वागत किया, तब उस किसान को वास्तविकता का अहसास हुआ और शर्म के मारे उसकी नजरें झुक गईं। वह गांधी जी के चरणों में गिरकर उनसे क्षमायाचना करने लगा। गांधी जी ने उसे उठाकर प्रेमपूर्वक गले से लगा लिया।

सूचना

समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमार ध्येय तथ्यों के आधार पर सफ़िक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। सभी विवादों का निपटार अंबिकापुर न्यायालय के अधीन होगा।

सम्पादक

बापू की सरल सीखों में छिपा जीवन का गहरा दर्शन



योगेश कुमार गोयल नजफगढ़, दिल्ली

ब्रिटिश गुलामी से मुक्ति दिलाने वाले गांधी जी ने पूरी दुनिया को अपने विचारों से प्रभावित किया था। अपने अनुभवों के आधार पर उन्होंने कई किताबें लिखीं, जो हमें आज भी जीवन की नई राह दिखती हैं। क्योंकि उनके ये अनुभव,उनके विचार आज भी उतने ही सार्थक हैं, जितने उस दौर में थे। सही मायनों में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी देश के करोड़ों युवाओं के पथ प्रदर्शक हैं। उनके जीवन के तीन महत्वपूर्ण सूत्र थे, जिनमें पहला था सामाजिक गंदगी दूर करने के लिए झाड़ू का सहारा। दूसरा, जाति-पाति और धर्म के बंधन से ऊपर उठकर सामूहिक प्रार्थना को बल देना। तीसरा,

चरखा, जो आगे चलकर आत्मनिर्भरता और एकाता का प्रतीक माना गया। गांधी जी प्रायः कहा करते थे कि प्रसन्नता ही एकमात्र ऐसा इत्र है, जिसे आप दूसरों पर डालते हैं तो उसकी कुछ बुंदें आप पर भी गिरती हैं। वे कहते थे कि किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके कपड़ों से नहीं, उसके चरित्र से होती है। दूसरों की तरकी में बाधा बनने वालों और नकारात्मक सोच वालों में सकारात्मकता की बीजारोपण करने के उद्देश्य से ही उन्होंने कहा था कि आंध के बदले आंध पूरी दुनिया को ही अंधा बना देगी। लोगों को समय की महत्ता और समय के सही सदुपयोग के लिए प्रेरित करते हुए उन्होंने कहा था कि व्यक्ति समय को बचाते हैं, वे धन को भी बचाते हैं और इस प्रकार बचाया गया धन भी कमाए गए धन के समान ही महत्वपूर्ण है। वह कहते थे कि आप जो कुछ भी कार्य करते हैं, वह भले ही कम महत्वपूर्ण हो सकता है किन्तु सबसे महत्वपूर्ण यही है कि आप कुछ करें। लोगों को जीवन में हर दिन, हर पल कुछ न कुछ नया सीखने के लिए प्रेरित करते हुए गांधी जी आह्वान करते थे कि आप ऐसे जिएं, जैसे आपको कल मरना है लेकिन सीखें ऐसे कि आपको हमेशा जीवित रहना है। उनकी बातों



का देशवासियों के दिलोदिमा पर गहरा असर होता था। महात्मा गांधी के विचारों में ऐसी शक्ति थी कि विरोधी भी उनकी तारीफ किए बगैर नहीं रह सकते थे। ऐसे कई किस्से भी सामने आते हैं, जिससे उनकी ईमानदारी,स्पष्टवादिता,सत्यनिष्ठा और शिष्टता की स्पष्ट झलक मिलती है। एक बार महात्मा गांधी श्रीमती सरोजिनी नायडू के साथ बैडमिंटन खेल रहे थे। श्रीमती नायडू के दाएं हाथ में चोट लगी थी। यह देखकर गांधी जी ने भी अपने बाएं हाथ में ही रैकेट पकड़ लिया। श्रीमती नायडू का ध्यान जब इस ओर गया तो वह खिलखिलाकर हंस पड़ी और कहने लगी, ‘आपको तो यह भी नहीं पता कि रैकेट कौनसे हाथ में पकड़ा जाता है?’ इस पर बापू ने जवाब दिया, ‘आपने भी तो अपने दाएं हाथ में चोट लगी होने के कारण बाएं हाथ में रैकेट

पकड़ा हुआ है और मैं किसी की भी मजबूरी का फायदा नहीं उठाना चाहता। अगर आप मजबूरी के कारण दाएं हाथ से रैकेट पकड़कर नहीं खेल सकती तो मैं अपने दाएं हाथ का फायदा क्यों उठाऊं?’गांधी जी एक बार जैतपुर में हरिजनों तथा मेमन जाति के मोहल्ले में आयोजित एक सभा में भाषण दे रहे थे। मेमन जाति कटियावाड़ी मुसलमानों की एक विशेष जाति होती है। इस जाति के लड़के उन दिनों बहुत बिगड़े हुए, शरारती तथा आवारा किस के हुआ करते थे। गांधी जी ने जैसे ही अपना भाषण शुरू किया, उसी समय एक 10-12 वर्ष का लड़का भी सभास्थल पर पहुंचा और लोगों के धक्के देता हुआ मुंह में बीड़ी लगाए सबसे आगे जा पहुंचा तथा बीड़ी का धुआं छोड़ते हुए अशिष्टतापूर्ण नजरों से गांधी जी की ओर देखने लगा। गांधी जी की नजर उस लड़के पर पड़ी तो उन्होंने अपना भाषण बीच में ही रोककर उस लड़के की ओर देखते हुए कहा, ‘अरे, देखो इतना छोटा सा लड़का बीड़ी पी रहा है। अरे फैक दे भाई, बीड़ी को फैक दे।’ गांधी जी के इतने सरल शब्दों का ही उस लड़के पर ज़ुल्म सा असर हुआ। उसने तुरंत बीड़ी मुंह से निकालकर फैक दी तथा श्रोताओं के बीच शिष्टता से बैठकर बड़े ध्यान से

गांधी जी का भाषण सुनने लगा। महात्मा गांधी एक बार चम्पारण से बतिया रेलगाड़ी में सफर कर रहे थे। गाड़ी में अधिक भीड़ न होने के कारण वे तीसरे दर्जे के डिब्बे में जाकर एक बर्थ पर लेट गए। आगले स्टेशन पर जब रेलगाड़ी रूकी तो एक किसान उस डिब्बे में चढ़ा। उसने बर्थ पर लेटे हुए गांधी जी को अपशब्द बोलते हुए कहा, ‘यहां से खड़े हो जाओ वरना ऐसे पसरे पड़े हो, जैसे यह रेलगाड़ी तुम्हारे बाप की है।’ गांधी जी किसान को बिना कुछ कहे चुपचाप उठकर एक ओर बैठ गए। तभी किसान बर्थ पर आराम से बैठते हुए बजे आगे काफिला रुकेगा। सबसे पहले उतरेगा वह ठेकेदार,जिसके बनाए पुल पिछले हफ्ते ही बह गए और चार मजदूर मलबे में दबकर गंधी गए। वह मेरे गले में सूत की माला डालेगा। उस सूत के हर धागे में उन था लेकिन इससे पहले उसने गांधी जी को कभी देखा नहीं था, इसलिए रेलगाड़ी में उन्हें पहचान न सका। बतिया पहुंचने पर स्टेशन पर जब हजारों लोगों की भीड़ ने गांधी जी का स्वागत किया, तब उस किसान को वास्तविकता का अहसास हुआ और शर्म के मारे उसकी नजरें झुक गईं। वह गांधी जी के चरणों में गिरकर उनसे क्षमायाचना करने लगा। गांधी जी ने उसे उठाकर प्रेमपूर्वक गले से लगा लिया।

झटका तार में फंसने से तीन साल के हाथी शावक की मौत, दो गिरफ्तार

उदयपुर के अलकापुरी जंगल में खेत की सुरक्षा के लिए लगाया था करंट, पीएम रिपोर्ट में करंट से मौत की पुष्टि



शावक की मौत के बाद पूरी रात चिंघाड़ते रहे हाथी, दहशत में बीती ग्रामीणों की रात

—संवाददाता—
अम्बिकापुर, 01 अक्टूबर 2026 (घटती-घटना)।

उदयपुर वन परिक्षेत्र के अलकापुरी कक्ष क्रमांक पी-2027 में फसल की सुरक्षा के लिए लगाए गए झटका तार की चपेट में आने से करीब तीन साल के हाथी शावक की मौत हो गई। घटना बुधवार रात की है। गुरुवार सुबह ग्रामीणों ने जंगल में शावक का शव देखा और वन विभाग को सूचना दी। सूचना मिलते ही डीएफओ लोकनाथ पटेल, एसडीओ और रेंजर सहित वन अमला मौके पर पहुंचा। तीन वेटनरी डॉक्टरों की टीम ने शव का पोस्टमार्टम किया। पीएम रिपोर्ट में शावक की मौत करंट लगने से होने की पुष्टि

हुई है। वन विभाग ने मामले में अलकापुरी निवासी अतिफ एक्का और राजीव एक्का को गिरफ्तार किया है। दोनों के खिलाफ कार्रवाई कर उन्हें जेल दाखिल कराया गया है। डीएफओ लोकनाथ पटेल ने बताया कि प्रारंभिक जांच में सामने आया कि ग्रामीणों ने फसल की सुरक्षा के लिए जंगल से लगे खेत के आसपास बैटरी के माध्यम से करंट प्रवाहित करने वाला तार लगाया था। इसी तार में फंसने से शावक की मौत हुई। जंगल में करंट प्रवाहित करना गैरकानूनी है। मामले की जांच जारी है। अन्य लोगों की भूमिका सामने आने पर उनके खिलाफ भी कार्रवाई की जाएगी। बताया जा रहा है कि जिस खेत के आसपास तार लगाया गया था, वह झिरमिट्टी सरपंच चंदन एक्का के परिवार की भूमि है। शावक का पर और सूंड तार में फंस गए थे। लगातार करंट प्रवाहित होने के कारण उसकी मौत हो गई।

27 हाथियों का दल कर रहा विचरण

डीएफओ के अनुसार, उदयपुर वन परिक्षेत्र में पहले से 15 हाथियों का दल विचरण कर रहा था। इसी बीच लेमरू जंगल की ओर से 12 हाथी और पहुंच गए। इससे क्षेत्र में हाथियों की संख्या बढ़कर 27 हो गई है। हाथी दो समूहों में विचरण कर रहे हैं। मृत शावक लेमरू जंगल से आए 12 हाथियों के दल का सदस्य बताया जा रहा है।

पीएम के बाद जंगल में अंतिम संस्कार

डीएफओ और एसडीओ की मौजूदगी में तीन वेटनरी डॉक्टरों ने शावक का पोस्टमार्टम किया। पीएम के बाद वन विभाग ने जंगल में ही शावक का अंतिम संस्कार कराया। डीएफओ ने जंगल से लगे गांवों के लोगों को करंट वाला तार नहीं लगाने की हिदायत दी है। वन अमले को भी क्षेत्र में लगातार निगरानी रखने के निर्देश दिए गए हैं।

शावक की मौत के बाद रातभर चिंघाड़ते रहे हाथी

शावक की मौत के बाद हाथियों के दल में बेचैनी देखी गई। घटना के बाद हाथी काफी देर तक चिंघाड़ते रहे। अलकापुरी के ग्रामीणों के अनुसार, पूरी रात हाथियों की चिंघाड़ सुनाई देती रही। इससे लोगों में दहशत बनी रही और ग्रामीण घरों से बाहर निकलने से बचते रहे। क्षेत्र में हाथियों की मौजूदगी को देखते हुए वन विभाग ने निगरानी बढ़ा दी है।



राजस्व रिकॉर्ड में रकबा बढ़ाकर 20 लाख की जमीन धोखे से बेचने का आरोप

मेण्ड्राकला में खसरा नंबर 922 के रिकॉर्ड में हेराफेरी का खुलासा, भू-स्वामी समेत तत्कालीन पटवारी पर केस दर्ज

—संवाददाता—
अम्बिकापुर, 01 अक्टूबर 2026 (घटती-घटना)।

मण्डपुर थाना क्षेत्र के ग्राम मेण्ड्राकला में जमीन के रकबे में हेराफेरी कर धोखाधड़ी किए जाने का मामला सामने आया है। शिकायत और प्रशासनिक जांच रिपोर्ट के आधार पर पुलिस ने भू-स्वामी पाण्डु, बुद्धि और तत्कालीन हल्का पटवारी पन्ने लाल सोनवानी के खिलाफ धोखाधड़ी, कूटरचना और आपराधिक षड्यंत्र सहित विभिन्न धाराओं में अपराध दर्ज किया है। जानकारी के अनुसार ब्रह्मरोड निवासी रमेश कुमार अग्रवाल ने मेण्ड्राकला स्थित खसरा नंबर 922 की 0.753 हेक्टेयर जमीन का सौदा किया था। पूरी राशि का भुगतान कर जमीन की रजिस्ट्री और नामांतरण कराने के बाद जब मौके पर सीमांकन कराया गया तो वास्तविक रकबा कम मिला। शिकायतकर्ता के अनुसार इससे उसे करीब 20 लाख रुपए का आर्थिक नुकसान हुआ।

पुराने रिकॉर्ड में की गई हेराफेरी : शिकायत के बाद कलेक्टर कार्यालय की भू-अभिलेख शाखा ने जांच कराई। जांच रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2005 से 2007 के दौरान पदस्थ तत्कालीन हल्का पटवारी पन्ने लाल सोनवानी ने पाण्डु और बुद्धि के नाम दर्ज मूल रकबे 0.433 हेक्टेयर में कथित ओवरराइटिंग एवं कूटरचना कर 0.753 हेक्टेयर दर्ज किया था। इसी रिकॉर्ड के आधार पर जमीन का विक्रय किए जाने की बात जांच में सामने आई। तीन आरोपियों पर एफआईआर : विशेष जांच दल की रिपोर्ट में शासकीय अभिलेखों में हेराफेरी की पुष्टि होने के बाद मण्डपुर पुलिस ने मामला दर्ज किया। पुलिस के अनुसार पाण्डु पिता कल्याण दास, बुद्धि पिता कल्याण दास और तत्कालीन पटवारी पन्ने लाल सोनवानी के खिलाफ धारा 420, 467, 468, 471 और 120-बी के तहत अपराध दर्ज किया गया है। मामले की जांच जारी है। एफआईआर दर्ज की गई है।

ट्रक पलटा तो गड्ढे में छिपा दिया 238 किलो गांजा, चालक गिरफ्तार

घाट पेंडारी में पुलिस ने 1.19 करोड़ का गांजा किया जब्त, प्लास्टिक दाने की बोरियों के बीच ओडिशा से यूपी ले जा रहा था खेप



—संवाददाता—

सूरजपुर, 01 अक्टूबर 2026 (घटती-घटना)। नशे के अवैध कारोबार के खिलाफ चल रही कार्रवाई के बीच चंदौर पुलिस ने घाट पेंडारी में 238 किलो 290 ग्राम गांजा बरामद किया है। जब गांजे की कीमत करीब 1 करोड़ 19 लाख रुपए बताई जा रही है। पुलिस ने मामले में ट्रक चालक सुनील कुमार सिंह (32) को गिरफ्तार किया है। उसके खिलाफ एनडीपीएस एक्ट की धारा 20(बी) के तहत अपराध दर्ज किया गया है। पुलिस को 30 सितंबर को मुखबिर से सूचना मिली कि घाट पेंडारी में ट्रक क्रमांक यूपी 13 टी-5497 पलट गया है। ट्रक को क्रोन से उठाने के बाद चालक द्वारा मौके पर बिखरे प्लास्टिक दाने की बोरियों को समेटा जा रहा है। सूचना में यह भी बताया गया कि कुछ सामान को सड़क से कुछ दूरी पर गड्ढे में रखकर तिरपाल से ढंका गया है और वहां किसी को जाने नहीं दिया जा रहा है। सूचना पर पुलिस टीम मौके पर पहुंची। वहां क्षतिग्रस्त ट्रक और आसपास प्लास्टिक दाने की बोरियां मिलीं। ट्रक चालक और अन्य लोग मौके पर नहीं थे। संदेह के आधार पर

पुलिस ने आसपास तलाशी ली तो गड्ढे में तिरपाल से ढंकाकर रखी 9 बोरियां मिलीं। जांच करने पर इनमें गांजा भरा मिला।

प्लास्टिक दाने की 19 बोरियां भी जब्त : पुलिस ने गांजे के साथ ट्रक और उसमें लदी प्लास्टिक दाने की 19 बड़ी बोरियां भी जब्त की हैं। पुछराछ में गिरफ्तार चालक सुनील कुमार सिंह ने पुलिस को बताया कि वह ओडिशा से प्लास्टिक दाने के साथ गांजा लेकर उत्तर प्रदेश जा रहा था।

ट्रक पलटा तो खेप छिपा दी : पुलिस के अनुसार आरोपी ट्रक को अलीगढ़ निवासी अपने साथी के नाम पर पंजीकृत बताता है और साझेदारी में चलाता था। उसने बताया कि हथरस निवासी एक चालक के माध्यम से ट्रक में गांजा लोड कराया गया था और वह खेप लेकर लखनऊ जा रहा था। 29 सितंबर को घाट पेंडारी में ट्रक पलटने के बाद गांजे की बोरियों को निकालकर गड्ढे में छिपाया गया था। कार्रवाई में थाना प्रभारी लक्ष्मण सिंह धुर्वे, प्रधान आरक्षक शैलेश सिंह, भगवत दयाल पैकरा सहित पुलिस टीम शामिल रही। मामले में पुलिस आगे की विवेचना कर रही है।

जमीन में लेट कर बेटे को दूध पिला रही महिला सांप ने डसा, मौत



—संवाददाता—

अम्बिकापुर, 01 अक्टूबर 2026 (घटती-घटना)। रघुनाथपुर चौकी क्षेत्र के ग्राम सिलसिला में बुधवार की शाम महिला अपने मामू मूसा बेटा को जमीन में लेटकर स्तनपान करा रही थीं। तभी करैत सांप ने महिला को डस लिया। परिजन उसे इलाज के लिए शांतिपारा अस्पताल ले गए। यहां से रेफर करने पर मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती कराया गया। यहां इलाज के दौरान गुरुवार की सुबह उसकी मौत हो गई। जानकारी के अनुसार बुधवार को राधा पति खोरा राम कोरा उम्र 32 वर्ष ग्राम सिलसिला थाना लुण्डा की रहने वाली थीं। वह बुधवार की शाम करीब 6 बजे अपने 3 वर्षीय बेटा को घर के बरामदे में जमीन में लेट कर स्तनपान करा रही थीं। तभी करैत सांप ने उसके हाथ में डस लिया। महिला को पता चला तो बेटो को अपने पास से दूर किया और डंडे से सांप को मार दी। इसके बाद वह घटना की जानकारी परिजन को दी। आधे घंटे बाद महिला ने घटना की जानकारी पति को दी। पति उसे इलाज के लिए शांतिपारा बतौली अस्पताल में भर्ती कराया। यहां प्राथमिक उपचार के बाद डॉक्टर ने उसे रेफर कर दिया। रेफर करने पर परिजन उसे अम्बिकापुर मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती कराया। यहां इलाज के दौरान गुरुवार की सुबह उसकी मौत हो गई।

नए आपराधिक कानूनों के क्रियान्वयन की समीक्षा, सभी विभागों के बीच समन्वय पर जोर

—संवाददाता—
अम्बिकापुर, 01 अक्टूबर 2026 (घटती-घटना)।

नवीन न्याय संहिता एवं नए आपराधिक कानूनों के प्रभावी और सुचारु क्रियान्वयन को लेकर पुलिस अधीक्षक कार्यालय के सभागार में शुक्रवार को अंतर-विभागीय समन्वय बैठक आयोजित की गई। डीआईजी राजेश अग्रवाल के निर्देशन में आयोजित बैठक में पुलिस, जेल, फॉरेंसिक, अभियोजन और स्वास्थ्य विभाग

के अधिकारियों ने हिस्सा लिया। बैठक जिला नोडल अधिकारी एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रितेश चौधरी की अगुवाई में हुई।

इसके बाद पुलिस महानिरीक्षक (सीआईडी, सीसीटीएनएस/एससीआरबी) की अध्यक्षता में आयोजित राज्यस्तरीय ऑनलाइन वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से समीक्षा बैठक में सभी विभागों के अधिकारियों ने भाग लिया। राज्यस्तरीय समीक्षा बैठक में मिले निर्देशों के अनुरूप

सभी विभागों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करने पर सहमति बनी। अधिकारियों को नए कानूनों के तहत प्रकरणों में आवश्यक प्रक्रियाएं निर्धारित समय-सीमा में पूरी करने के निर्देश दिए गए। बैठक के अंत में जिला नोडल अधिकारी रितेश चौधरी ने सभी विभागों के बीच निरंतर संवाद बनाए रखने और कार्यों का समय-सीमा में निष्पादन सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।



लखनपुर में लगा सेवा संकल्प शिविर, एक ही छत के नीचे मिली कई सरकारी योजनाओं की सुविधा

—संवाददाता—
लखनपुर, 01 अक्टूबर 2026 (घटती-घटना)।

आम नागरिकों को सरकारी योजनाओं और सेवाओं का लाभ आसानी से उपलब्ध कराने के उद्देश्य से गुरुवार को नगर पंचायत लखनपुर परिसर में 'सेवा संकल्प अभियान' के तहत संकल्प शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में विभिन्न विभागों ने स्टॉल लगाकर लोगों को योजनाओं की जानकारी देने के साथ पात्र हितग्राहियों को मौके पर ही लाभ पहुंचाया। कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ शासन के मंत्री राजेश अग्रवाल मुख्य अतिथि



के रूप में शामिल हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता नगर पंचायत अध्यक्ष श्रीमती सावित्री दिनेश साहू ने की। शिविर में प्रधानमंत्री आवास

योजना, राशन कार्ड, पेंशन, परिवार सहायता, राजस्व, स्वास्थ्य विभाग, आयुष्मान कार्ड, विद्युत विभाग, कृषि विभाग, आधार सेवा केंद्र और

उज्ज्वला योजना सहित विभिन्न विभागों के स्टॉल लगाए गए। इसका उद्देश्य आम लोगों को अलग-अलग कार्यालयों के चक्कर

लगाने के बजाय एक ही स्थान पर आवश्यक सेवाएं और योजनाओं की जानकारी उपलब्ध कराना रहा। हितग्राहियों को मिला योजनाओं का लाभ : शिविर के दौरान प्रधानमंत्री आवास योजना-2.0 के पात्र हितग्राहियों को स्वीकृति प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। इसके साथ ही पात्र लोगों को आयुष्मान कार्ड भी वितरित किए गए। स्वच्छता के क्षेत्र में कार्य करने वाली 16 स्वच्छता दीर्घियों को सुरक्षा उपकरण प्रदान कर शॉल-श्रीफल से सम्मानित किया गया। वहीं नगर पंचायत क्षेत्र की 15 मितानिन बहनों तथा नगर पंचायत

के 17 सफाई कर्मचारियों को भी शॉल-श्रीफल देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में भाजपा जिला अध्यक्ष भारत सिंह सिमोदिया, जिला महामंत्री विनोद हर्ष, अन्य नगरप्रतिनिधि, नगर पंचायत पार्षद, तहसीलदार, मुख्य नगर पालिका अधिकारी, अधिकारी-कर्मचारी, स्वच्छता दीर्घियों, मितानिन बहनें, सफाई कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में नागरिक मौजूद रहे। संकल्प शिविर का मुख्य संदेश यही रहा कि सरकारी योजनाओं का लाभ पात्र व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए प्रशासन और विभागों को नागरिकों के करीब लाया जाए।

कृषि विज्ञान केंद्र सरगुजा को मिला 'बेस्ट केवीके अवार्ड',राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ा सरगुजा का मान भोपाल में आयोजित 'फार्म एन फूड कृषि सम्मान अवार्ड' में कृषि विज्ञान केंद्र सरगुजा सम्मानित

सरगुजा की मशरूम उत्पादक कृषक श्रीमती सुरबिल दास को 'बेस्ट फीमेल फार्मर' और श्री अम्बिकेश्वर राजवाड़े को 'बेस्ट मधुमक्खी पालक कृषक' का सम्मान

—संवाददाता—

अम्बिकापुर,01 अक्टूबर 2026
(घटती-घटना)।

कृषि के क्षेत्र में नवाचार,उन्नत तकनीकों के प्रसार और किसानों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में किए जा रहे प्रयासों के लिए कृषि विज्ञान केंद्र सरगुजा को 'बेस्ट केवीके अवार्ड' से सम्मानित किया गया है। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल स्थित आईसीएआर-सीआईईई संस्थान में 30 सितम्बर को दिल्ली प्रेस की कृषि पत्रिका 'फार्म एन फूड' द्वारा आयोजित 'राज्य स्तरीय फार्म एन फूड कृषि सम्मान अवार्ड' समारोह में कृषि विज्ञान केंद्र सरगुजा को यह सम्मान प्रदान किया गया। केंद्र की ओर से वैज्ञानिक श्री सूर्य प्रकाश गुप्ता ने पुरस्कार ग्रहण किया। कार्यक्रम में मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के 300 से अधिक किसान और कृषि वैज्ञानिक शामिल हुए। कृषि में नवाचार, तकनीक के उपयोग और विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाले लगभग 40 किसानों,कृषि वैज्ञानिकों,फार्मर प्रोड्यूसर



अर्गिनाइजेशन तथा कृषि विज्ञान केंद्रों को अलग-अलग श्रेणियों में सम्मानित किया गया।

100 से अधिक नामांकनों में चयन, चार सदस्यीय जुरी ने किया मूल्यांकन : विभिन्न पुरस्कार श्रेणियों के लिए मध्य प्रदेश एवं

छत्तीसगढ़ के कृषि विज्ञान केंद्रों और कृषि संस्थानों की अनुशंसा सहित 100 से अधिक नामांकन प्राप्त हुए थे। प्राप्त नामांकनों का चार सदस्यीय जुरी द्वारा मूल्यांकन किया गया, जिसके बाद विभिन्न श्रेणियों में उत्कृष्ट कार्यों के आधार

पर पुरस्कार के लिए चयन किया गया। इसी क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र सरगुजा को 'बेस्ट केवीके अवार्ड' से सम्मानित किया गया।

सरगुजा के किसानों ने भी बढ़ाया मान : सम्मान समारोह में सरगुजा जिले के किसानों की उपलब्धियों को भी विशेष पहचान मिली। जिले की मशरूम उत्पादक कृषक श्रीमती सुरबिल दास को 'बेस्ट फीमेल फार्मर' अवार्ड तथा श्री अम्बिकेश्वर राजवाड़े को 'बेस्ट मधुमक्खी पालक कृषक' अवार्ड से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मध्य प्रदेश शासन के उद्यान विज्ञान एवं खाद्य प्रसंस्करण मंत्री श्री नारायण सिंह कुशवाहा एवं विशिष्ट अतिथि कौशल विकास एवं रोजगार राज्यमंत्री श्री गौतम टेटवाल ने पुरस्कार प्रदान किए। कृषि विज्ञान केंद्र के साथ जिले के दो कृषकों को अलग-अलग श्रेणियों में मिले सम्मान से कृषि क्षेत्र में सरगुजा में किए जा रहे नवाचारों और किसानों की सक्रिय भागीदारी को पहचान मिली है।

किसानों की आय बढ़ाने और कृषि को लाभकारी बनाने की दिशा में निरंतर प्रयास : डॉ. संदीप शर्मा

कृषि विज्ञान केंद्र सरगुजा के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. संदीप शर्मा ने सम्मान मिलने पर कहा कि केंद्र किसानों की आय में वृद्धि, उन्नत कृषि तकनीकों के प्रसार, प्राकृतिक एवं टिकाऊ खेती, फसल विविधीकरण, मूल्य संवर्धन तथा कृषि उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए निरंतर कार्य कर रहा है। किसानों तक नवीन कृषि तकनीकों और वैज्ञानिक जानकारी को पहुंचाकर खेती को अधिक लाभकारी बनाने की दिशा में लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह पुरस्कार केवल कृषि विज्ञान केंद्र का सम्मान नहीं, बल्कि केंद्र के वैज्ञानिकों, कर्मचारियों, कृषक मित्रों और उन सभी किसानों के परिश्रम का सम्मान है, जिन्होंने वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाकर कृषि एवं ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

सम्मान के साथ बढ़ी जिम्मेदारी,किसानों तक और प्रभावी ढंग से पहुंचाएंगे नवीन तकनीक

डॉ. शर्मा ने कहा कि यह सम्मान कृषि विज्ञान केंद्र के लिए नई प्रेरणा के साथ जिम्मेदारी भी लेकर आया है। केंद्र का प्रयास रहेगा कि नवीनतम कृषि तकनीकों और वैज्ञानिक जानकारी को किसानों तक और अधिक प्रभावी ढंग से पहुंचाया जाए तथा खेती को लाभकारी और आत्मनिर्भर बनाने में किसानों को निरंतर तकनीकी सहयोग दिया जाए। उन्होंने 'बेस्ट केवीके अवार्ड' की उपलब्धि का श्रेय इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर के कुलपति डॉ. गिरीश चंदेल एवं निदेशक विस्तार डॉ. एस.एस. टुटेजा के निर्देशन एवं मार्गदर्शन के साथ कृषि विज्ञान केंद्र की पूरी टीम और सरगुजा जिले के कृषकों को दिया।

स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत दरिमा में विविध स्वच्छता गतिविधियां आयोजित



—संवाददाता—
अम्बिकापुर,01 अक्टूबर 2026
(घटती-घटना)।

'स्वच्छता ही सेवा अभियान-2026' के तहत गुरुवार को जिलेभर में विभिन्न स्थानों पर विशेष स्वच्छता श्रमदान कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। अभियान के अंतर्गत 'एक दिन-एक घंटा-एक साथ' थीम पर जनपद पंचायत अम्बिकापुर के ग्राम पंचायत दरिमा में विविध स्वच्छता एवं जनजागरूकता गतिविधियों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सामूहिक स्वच्छता श्रमदान, स्वच्छता संवाद, हाथ धुलाई कार्यक्रम, स्वच्छता रैली, डोर-टू-डोर स्वच्छगृह, 'एक पेड़ मां के नाम' के तहत पौधरोपण तथा स्वच्छता दीर्घियों का स्वास्थ्य परीक्षण कराया गया। डोर-टू-डोर स्वच्छगृह के माध्यम से ग्रामीणों से संवाद कर स्रोत स्तर पर

ही चार प्रकार के कचरे का पृथक्करण करने तथा निर्धारित व्यवस्था के अनुसार कचरा देने के लिए प्रेरित किया गया। साथ ही नियमित रूप से यूजर चार्ज का भुगतान करने का आग्रह किया गया।

कार्यक्रम के दौरान जनप्रतिनिधियों एवं ग्रामीणों ने स्वच्छता गतिविधियों में उत्साहपूर्वक भागीदारी करते हुए स्वच्छ एवं स्वस्थ ग्राम के निर्माण में सहयोग का संकल्प लिया।

इस दौरान सभी ने मिलकर ग्राम की साफ-सफाई की। आयोजन का उद्देश्य स्वच्छता के प्रति जनजागरूकता बढ़ाने, कचरे के स्रोत पर पृथक्करण को बढ़ावा देने तथा स्वच्छता अभियान में समुदायिक सहभागिता को मजबूत करना रहा। कार्यक्रम में जनप्रतिनिधियों, जनपद एवं पंचायत स्तरीय अधिकारियों-कर्मचारियों तथा ग्रामवासियों की सहभागिता रही।

अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस पर सियानगुड़ी में सम्मान समारोह आयोजित

वृद्धजन परिवार और समाज की अमूल्य धरोहर है, उनके जीवन का अनुभव समाज के लिए महत्वपूर्ण : मंत्री राजेश अग्रवाल



—संवाददाता—
अम्बिकापुर,01 अक्टूबर 2026
(घटती-घटना)।

अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस के अवसर पर गुरुवार को सियानगुड़ी में वृद्धजनों के सम्मान में विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सेवा संकल्प अभियान के तहत आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री श्री राजेश अग्रवाल उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान मंत्री श्री अग्रवाल ने उपस्थित वृद्धजनों को शॉल श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि वृद्धजन परिवार और समाज की अमूल्य धरोहर है। उनके जीवन का अनुभव समाज के लिए महत्वपूर्ण है। वृद्धजनों के सम्मान

और गरिमा की रक्षा करना परिवार के साथ-साथ समाज की भी जिम्मेदारी है। माता-पिता और वृद्धजनों का सम्मान करना हम सभी का दायित्व है। ये हमारे देश के संस्कार हैं कि आज बच्चे अपने माता-पिता, बड़े बुजुर्गों का सम्मान करते हैं। उन्होंने कहा कि परिवार में माता-पिता का सम्मान और उनकी सेवा करने से परिवार में आपसी प्रेम, संस्कार और सद्भाव की भावना मजबूत होती है। उन्होंने कहा कि शासन एवं विभिन्न संस्थाओं द्वारा वृद्धजनों के हित में संचालित योजनाओं और सुविधाओं का लाभ उन्हें मिलना चाहिए। इस दौरान उपस्थित सभी जनप्रतिनिधियों ने अपने उद्घोषण में वृद्धजनों के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए उनके स्वस्थ, सुखी और



सम्मानजनक जीवन की कामना की। उन्होंने लोगों से आग्रह किया कि वे अपने माता-पिता का सम्मान करें और वृद्धजनों की भावनाओं को समझते हुए उनका साथ दें। कार्यक्रम के दौरान वृद्धजनों में भी खासा उत्साह देखने को मिला। इस दौरान गीत और नृत्य की मनमोहक प्रस्तुतियां दी गईं।

उपसंचालक समाज कल्याण ने विभाग द्वारा वृद्धजनों के लिए संचालित योजनाओं की जानकारी दी। इस दौरान सरगुजा सांसद श्री चिताराम महाराज, तुण्डु विधायक श्री प्रबोध मिश्र, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल के अध्यक्ष श्री अनुराग सिंहदेव, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती निरुपा सिंह, महापौर श्रीमती मंजूषा भगत, सभापति श्री हरमिंदर सिंह

टिनी,नगर निगम आयुक्त श्री विनय कुमार अग्रवाल, समाज कल्याण विभाग के उप संचालक श्री व्ही.के. उके, स्थानीय जनप्रतिनिधि, जिला प्रशासन के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

स्वास्थ्य एवं नेत्र जांच शिविर का आयोजन- वृद्धजनों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रम स्थल पर स्वास्थ्य जांच एवं नेत्र जांच शिविर का भी आयोजन किया गया। शिविर में वृद्धजनों के स्वास्थ्य की जांच की गई तथा नेत्र संबंधी समस्याओं की जांच कर आवश्यक चिकित्सकीय परामर्श दिया गया। स्वास्थ्य जांच शिविर के माध्यम से बुजुर्गों को नियमित स्वास्थ्य परीक्षण कराने के प्रति भी जागरूक किया गया।

वर्षों से लगे अवैध होर्डिंग हटाने की मांग,पार्षद प्रमोद टायल ने सीएमओ को लिखा पत्र

नगरपालिका क्षेत्र में लगे सभी विज्ञापन बोर्डों का वार्डवार सर्वे कराने की मांग,अनुमति,अनुज्ञाप्ति,शुल्क और वैधता अवधि की जांच पर जोर

—संवाददाता—

सूरजपुर 01 अक्टूबर 2026
(घटती-घटना)।

नगरपालिका क्षेत्र में वर्षों से लगे होर्डिंग एवं विज्ञापन बोर्डों को लेकर वार्ड क्रमांक 16 के पार्षद प्रमोद टायल ने मुख्य नगर पालिका अधिकारी (सीएमओ) को पत्र सौंपकर कार्रवाई की मांग की है। पार्षद ने नगरपालिका क्षेत्र में लगे सभी होर्डिंग और विज्ञापन बोर्डों का स्थलवार एवं वार्डवार सर्वे कराने के साथ उनकी अनुमति,अनुज्ञाप्ति,निर्धारित विज्ञापन शुल्क और अनुमति की वैधता अवधि की जांच कराने की मांग की है। पार्षद का कहना है कि नगरपालिका क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर लंबे समय से बड़ी संख्या में होर्डिंग और विज्ञापन बोर्ड लगे हुए हैं, इनमें कुछ ऐसे होर्डिंग भी बताए गए हैं,जिनकी नगरपालिका से विधिवत अनुमति प्राप्त है या नहीं तथा निर्धारित शुल्क जमा किया गया है या नहीं,इसकी स्थिति स्पष्ट नहीं है,वहीं कुछ होर्डिंग ऐसे भी होने की बात कही गई है,जिनकी अनुमति अवधि समाप्त होने के बावजूद वे अब भी लगे हुए हैं।



नगरपालिका के राजस्व को

नुकसान का हवाला- पार्षद प्रमोद टायल ने पत्र में कहा है कि यदि कोई होर्डिंग बिना अनुमति लगाया गया है अथवा अनुमति अवधि समाप्त होने के बाद भी लगा हुआ है, तो इससे नगरपालिका को विज्ञापन शुल्क के रूप में मिलने वाले राजस्व का नुकसान हो सकता है,उन्होंने प्रत्येक होर्डिंग का भौतिक सत्यापन कराकर यह स्पष्ट करने की मांग की है कि कौन से विज्ञापन बोर्ड अधिकृत हैं और कौन से नियमों के विपरीत लगे हुए

हैं। इसके लिए होर्डिंगवार अनुमति पत्र,अनुज्ञाप्ति, निर्धारित शुल्क,जमा राशि और अनुमति की वैधता अवधि का रिकॉर्ड जांचने की मांग की गई है।

बिना अनुमति लगे होर्डिंग तत्काल हटाने की मांग-पत्र में पार्षद ने बिना अनुमति लगाए गए तथा अनुमति की अवधि समाप्त हो चुके होर्डिंगों को नियमानुसार हटाने की मांग की है,साथ ही बिना अनुमति होर्डिंग लगाने वाले संबंधित व्यक्तियों के विरुद्ध नियमों के तहत कार्रवाई किए जाने की बात कही गई है,उन्होंने यह भी मांग की है कि ऐसे मामलों में नगरपालिका को यदि विज्ञापन शुल्क के रूप में राजस्व की क्षति हुई है तो संबंधित लोगों से बकाया शुल्क एवं नियमानुसार अन्य राशि की वसूली की जाए।

पूर्व के संकल्प पर भी उठाए सवाल- पार्षद ने अपने पत्र में नगरपालिका परिषद द्वारा पूर्व में इस संबंध में संकल्प पारित किए जाने का भी उल्लेख किया है, उनका कहना है कि यदि संकल्प पारित होने के बावजूद संबंधित होर्डिंगों पर कार्रवाई नहीं

हुई है तो इसकी भी जांच होनी चाहिए, उन्होंने संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों की भूमिका की जांच कराने की मांग की है, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि लंबे समय से अनधिकृत होर्डिंग लगे रहने के बावजूद उनके खिलाफ कार्रवाई क्यों नहीं की गई।

वार्डवार सर्वे और दस्तावेजीकरण की मांग- पार्षद ने नगरपालिका क्षेत्र में लगे सभी होर्डिंग एवं विज्ञापन बोर्डों का वार्डवार सर्वेक्षण और दस्तावेजीकरण कराने पर जोर दिया है, सर्वे के दौरान प्रत्येक होर्डिंग की स्थिति, अनुमति और शुल्क संबंधी जानकारी दर्ज करने की मांग की गई है, इसके बाद अनधिकृत होर्डिंगों को चिन्हित कर हटाने तथा अधिकृत विज्ञापन बोर्डों से नियमानुसार शुल्क वसूलने की व्यवस्था सुनिश्चित करने की मांग की गई है, अब इस पत्र के बाद नगरपालिका प्रशासन द्वारा होर्डिंग एवं विज्ञापन बोर्डों का सर्वे और जांच किस तरह कराई जाती है तथा अनधिकृत पाए जाने वाले बोर्डों पर क्या कार्रवाई होती है, यह देखने वाली बात होगी।

जिला चिकित्सालय में 16 मरीजों का सफल मोतियाबिंद ऑपरेशन

आँखों की रोशनी वापस लौटने से मरीजों में खुशी निःशुल्क जाँच,उपचार एवं दवाइयों का मिला लाभ

—संवाददाता—

बलरामपुर,01 अक्टूबर 2026
(घटती-घटना)।

सेवा संकल्प अभियान 2026 के अंतर्गत जिला चिकित्सालय बलरामपुर में विशेषज्ञ चिकित्सकों की टीम द्वारा 16 मरीजों का मोतियाबिंद का सफल ऑपरेशन किया गया। अभियान के तहत स्वास्थ्य विभाग द्वारा जिले के अंतिम व्यक्ति तक सुलभ, प्रभावी और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँचाने का निरंतर प्रयास किया जा रहा है। ऑपरेशन के उपरांत सभी मरीजों को आवश्यक दवाइयाँ तथा देखभाल संबंधी चिकित्सकीय परामर्श प्रदान किया गया, जिससे दृष्टि लौटने पर मरीजों ने शासन एवं स्वास्थ्य विभाग के प्रति आभार प्रकट किया। इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. विजय कुमार सिंह तथा राष्ट्रीय अंधत्व निर्यंत्रण कार्यक्रम के जिला



नोडल अधिकारी डॉ. विवेक सिंह ने बताया कि मोतियाबिंद दृष्टि बाधिता का मुख्य कारण है, जिसे समय पर जाँच व ऑपरेशन के माध्यम से पूरी तरह ठीक किया जा सकता है। उन्होंने जिलेवासियों, विशेषकर 60 वर्ष से अधिक आयु के नागरिकों से अपील की है कि

आँखों में धुंधलापन या दृष्टि संबंधी समस्या होने पर किटतम स्वास्थ्य केंद्र या जिला चिकित्सालय में अपनी जाँच अवश्य कराएँ। स्वास्थ्य विभाग द्वारा जिले में नेत्र परीक्षण एवं उपचार की सुविधा निःशुल्क उपलब्ध कराई जा रही है।

शासकीय पॉलीटेक्निक रामानुजगंज में श्रमदान और जागरूकता रैली का आयोजन



—संवाददाता—

बलरामपुर,01 अक्टूबर 2026(घटती-घटना)। स्वच्छता ही सेवा अभियान 2026 के अंतर्गत शासकीय पॉलीटेक्निक रामानुजगंज में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के तत्वावधान में विविध गतिविधियाँ आयोजित की गईं।

कार्यक्रम की शुरुआत संस्था के अधिकारी-कर्मचारियों, व्याख्याताओं और विद्यार्थियों ने स्वच्छता की शपथ लेकर की। इसके बाद एनएसएस स्वयंसेवकों एवं छात्र-छात्राओं ने संस्था परिसर और

आसपास के सार्वजनिक स्थलों पर श्रमदान कर विशेष सफाई अभियान चलाया। आमजन को जागरूक करने के लिए निकाली गई रैली में विद्यार्थियों ने नारों और तख्तियों के माध्यम से कचरे के सही निष्पादन, गीले-सूखे कचरे को अलग रखने तथा सार्वजनिक स्थलों को साफ रखने का संदेश दिया और स्वच्छता को दैनिक जीवन का हिस्सा बनाने का आह्वान किया। इस अवसर पर एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी श्री विनोद कुमार देवांगन सहित व्याख्यातगण, कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

—संवाददाता—
बलरामपुर,01 अक्टूबर 2026
(घटती-घटना)।

अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस पर आज जनपद पंचायत कार्यालय बलरामपुर का सभाकक्ष सनेह, सम्मान और अपनत्व के भाव से सराबोर रहा। कलेक्टर श्रीमती चंदन संजय त्रिपाठी ने समारोह में शामिल लगभग 250 वृद्धजनों को श्रीफल एवं शॉल भेंट कर सम्मानित किया और उनका आशीर्वाद लिया। बुजुर्गों के चेहरों पर खिली संतोष की मुस्कान, इस आयोजन की सबसे बड़ी उपलब्धि रही। बुजुर्गों को संबोधित करते हुए कलेक्टर श्रीमती त्रिपाठी ने कहा कि वृद्धजन हमारे परिवार और



समाज की वे जड़ें हैं, जिनके त्याग और अनुभव से आने वाली पीढ़ियाँ संसारी हैं। उन्हें याद रखना, उनका मान बढ़ाना और उनकी सेवा करना ही सच्ची मानवता है। उन्होंने कहा कि आपके आशीर्वाद से ही जिला सतत विकास की दिशा में अग्रसर रहेंगे। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय की मंशा के अनुरूप प्रशासन

वृद्धजनों को बेहतर सुविधाएँ देने के लिए प्रतिबद्ध है। इसी उद्देश्य से जिले में वृद्धजन केंद्रित विशेष क्लिनिक शुरू किया जाएगा, जहाँ पंजीयन से लेकर उपचार तक की समस्त स्वास्थ्य सेवाएँ एक ही छत के नीचे मिलेंगी। ऐसी व्यवस्था बनाई जाएगी कि किसी भी बुजुर्ग को इलाज के लिए भटकना न पड़े।



उन्होंने सभी से अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग रहने का आत्मीय आग्रह भी किया। समारोह का एक मनमोहक पहलू खेल गतिविधियाँ रहीं, जिनके जरिए बुजुर्गों ने अपने बचपन को फिर से जिया। रिंग टॉस, बॉल फेंक, बैलून गेम और रिंग कैच में उनकी उत्साहपूर्ण भागीदारी और

ठहकों ने पूरे माहौल को जीवंत बना दिया। इस अवसर पर वृद्धजनों का स्वास्थ्य परीक्षण भी किया गया। कार्यक्रम में मुख्याध्यक्ष अधिकारी अधिकारी जनपद पंचायत बलरामपुर, जनपद अध्यक्ष, जनपद उपाध्यक्ष सहित अन्य जनप्रतिनिधियाँ एवं अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहे।



“कुछ नहीं होगा, कार्रवाई नहीं होगी!”

शिवप्रसादनगर में इतना ‘कॉन्फिडेंस’ आखिर किसके भरोसे ?

शिवप्रसादनगर में भ्रष्टाचार का ‘कॉन्फिडेंस’ हाई! ‘खबर छापो, शिकायत करो...कुछ नहीं होगा’ का भरोसा आखिर किसके दम पर?

खबर छापो, शिकायत करो...हम देख लेंगे! शिवप्रसादनगर में कथित ‘कॉन्फिडेंस’ ने सहकारिता पर ही सवाल खड़े कर दिए

- धान किसानों का...पैसा समिति का और कॉन्फिडेंस इतना...‘कार्रवाई नहीं होगी!’ आखिर भरोसा किस पर ?
- शिवप्रसादनगर में ‘कॉन्फिडेंस’ हाई, कार्रवाई जीरो! आखिर किसके भरोसे चल रहा खेल ?
- खबर छापो, शिकायत करो... कुछ नहीं होगा!—शिवप्रसादनगर में कथित बेखौफ दावों से मचा सवाल का बाजार
- धान खरीदी केंद्र में इतना आत्मविश्वास क्यों ? कार्रवाई नहीं होगी के कथित दावे ने खड़े किए गंभीर सवाल
- शिकायत से बेफिक्र, कार्रवाई से बेखौफ! शिवप्रसादनगर में कथित ‘पहुंच’ का राज क्या है ?
- ऊपर तक पैसा पहुंचता है...कथित चर्चाओं ने खोली सहकारिता की ‘पहुंच’ वाली कहानी!
- शिवप्रसादनगर में हिसाब मांगो तो जवाब...‘कुछ नहीं होगा’ ! आखिर किसका संरक्षण ?
- करोड़ों के खर्च पर सवाल,आमसभा का पता नहीं और कार्रवाई का डर भी नहीं! शिवप्रसादनगर में क्या चल रहा है ?
- आमसभा हुई या कागजों में पूरी ? हमाली भुगतान से समिति खाते तक शिवप्रसादनगर में नए सवाल
- पहले खर्च,फिर हिसाब ? शिवप्रसादनगर समिति में भुगतान और कार्यवाही की पारदर्शिता पर सवाल
- प्रभारी कहते हैं ‘बहाली हो गई’, अधिकारी कहते हैं ‘नहीं हुई’—शिवप्रसादनगर में सच किस फाइल में ?
- सहकारिता में ‘जीरो टॉलरेंस’ या ‘जीरो एक्शन’ ? शिवप्रसादनगर के कथित आत्मविश्वास ने उठाए सवाल
- जितनी शिकायत करनी है करो...क्या शिवप्रसादनगर में कार्रवाई से पहले ही तय हो जाता है नतीजा ?
- अब वार्षिक आमसभा,हमाली भुगतान,किसानों के हस्ताक्षर और बहाली के परस्पर विरोधी दावों ने खोला नया मोर्चा
- यदि सचमुच कहा गया कि ‘पैसा वहां तक पहुंचता है जहां कार्रवाई की बागडोर है’,तो यह केवल समिति पर आरोप नहीं बल्कि पूरी जांच व्यवस्था को चुनौती
- दावा सही है या महज डींग...निष्पक्ष जांच से ही खुलेगा राज...



—ऑकार पाण्डेय—
सूरजपुर/शिवप्रसादनगर, 01 अक्टूबर 2026 (घटती-घटना)।

सहकारिता की दुनिया में शायद आत्मविश्वास की भी अपनी अलग किस्म होती है, सामान्य व्यक्ति के खिलाफ शिकायत हो जाए तो वह दस्तावेज तलाशता है, नोटिस आने की चिंता करता है और यह सोचता है कि जांच में क्या जवाब देगा? लेकिन शिवप्रसादनगर से विभागीय सूत्रों के हवाले से जो कथित बातचीत सामने आ रही है,उसे सही मानें तो यहां चिंता का विषय जांच नहीं,बल्कि यह भरोसा है कि ‘जांच हो भी गई तो क्या होगा? सूत्रों का दावा है कि धान खरीदी केंद्र से जुड़े जिम्मेदार लोगों की कथित बातचीत में बड़े आत्मविश्वास से यह कहा जाता है कि खबर जितनी छापनी है छापो,शिकायत जितनी करनी है करो, कुछ नहीं होगा और कोई कार्रवाई नहीं होगी, इतना ही नहीं, कथित बातचीत में यह तक कहे जाने का दावा है कि पैसा वहां तक पहुंच जाता है, जहां कार्रवाई की बागडोर होती है, यह कथन प्रमाणित तथ्य नहीं बल्कि सूत्रों के हवाले से सामने आया दावा है और इसकी स्वतंत्र जांच जरूरी है, लेकिन यदि किसी जिम्मेदार व्यक्ति ने वास्तव में ऐसी बात कही है तो सवाल गंभीर है की आखिर कार्रवाई नहीं होने का यह ‘गारंटी कार्ड’ सोहराब को किसने दिया? अगर कोई संरक्षण नहीं है तो इतना आत्मविश्वास क्यों? और अगर संरक्षण है तो किस स्तर का?

‘धान खरीदी केंद्र’ है या कार्रवाई से प्रतिरक्षा का प्रशिक्षण केंद्र?— धान खरीदी में जिम्मेदारी मिलने का मतलब किसानों की उपज और शासन की राशि से जुड़े काम को संभालना है, यहां प्रत्येक किंटल और प्रत्येक भुगतान का हिसाब होना चाहिए, लेकिन शिवप्रसादनगर को लेकर सामने आ रहे आरोपों को देखें तो चर्चा हिसाब से ज्यादा उस कथित आत्मविश्वास की है, जिसमें मानो कार्रवाई पहले ही निष्पत्ती घोषित कर दी गई हो, व्यंग्य में कहें तो यहां शाणद नया प्रशासनिक सिद्धांत तैयार हो गया है—पहले खर्च करो, फिर सवाल उठें तो कहे खबर छपने दो, शिकायत होने दो और अंत में आत्मविश्वास से घोषणा कर दो कि कार्रवाई नहीं होगी! लेकिन शासन इसी सिद्धांत पर नहीं चलता, रिकॉर्ड और कानून यह नहीं देखते कि कौन कितने आत्मविश्वास से बैठा है, यदि सक्षम स्तर पर निष्पक्ष जांच हो तो बैंक स्टेटमेंट, कैशबुक,भुगतान वाउचर,मजदूरी रजिस्टर, प्रस्ताव-उद्धारव, कार्यवाही पंजी और प्राप्तकर्ता का खाता अपने आप बोलने लगें हैं।

महफिल में ‘ऊपर तक पैसा’ पहुंचाने की कथित चर्चा—फिर तो जांच नीचे से नहीं,ऊपर तक होनी चाहिए—विभागीय सूत्रों

के अनुसार कथित बातचीत केवल ‘कार्रवाई नहीं होगी’ तक सीमित नहीं है, दावा है कि किस अधिकारी को कितना दिया, कहाँ कितना खर्च हुआ और किस स्तर तक पैसा पहुंचा—इस तरह की बातें भी चर्चाओं में कही जाती हैं,इन दावों को बिना प्रमाण किसी अधिकारी के खिलाफ तथ्य की तरह प्रकाशित करना उचित नहीं होगा, लेकिन इन्हें नजरअंदाज करना भी समाधान नहीं है,यदि ऐसी चर्चा में कहा जा रहा है तो शिकायत की जांच किस स्तर पर और किस अधिकारी के टेबल है,जिसे ये पता चल सके की कार्यवाही का रुकावट का स्तर कौन है जो सोहराब जाँच व कार्यवाही न होने का भरोसा दिलाता है?

‘जीरो टॉलरेंस’ बोर्ड पर लिखा है या फाइल में भी लागू होता है?—भ्रष्टाचार के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति का अर्थ केवल भाषण में कठोर शब्द होना नहीं है, उसकी वास्तविक परीक्षा तब होती है जब किसी छोटे कस्बे या गांव की सहकारी समिति के खाते पर सवाल उठता है, शिवप्रसादनगर में लगातार वित्तीय और प्रशासनिक सवाल सामने आने के बावजूद यदि कोई व्यक्ति वास्तव में महफिल में यह कहने की स्थिति में है कि ‘कुछ नहीं होगा’, तो सरकार और सहकारिता विभाग के लिए चिंता आरोप से ज्यादा इस मानसिकता की होनी चाहिए,या तो वह व्यक्ति केवल हवा में डींग मार रहा है, या उसे किसी संरक्षण का भ्रम है,या फिर उसके दावे के पीछे वास्तव में कुछ ऐसा है जिसकी जरूरत है, तीनों स्थितियों में विभाग की चुप्पी उचित उत्तर नहीं हो सकती।

वार्षिक आमसभा कहीं ‘धान खरीदी के समय एडवांस हस्ताक्षर योजना’ तो नहीं?—शिवप्रसादनगर से सामने आया दूसरा आरोप और भी दिलचस्प है, बताया जा रहा है कि समिति की अनिवार्य वार्षिक आमसभा विधिवत आयोजित किए जाने को लेकर स्थिति स्पष्ट नहीं है,आरोप यहां तक है कि धान खरीदी के समय किसानों से रजिस्टर में हस्ताक्षर पहले ही करा लिए जाते हैं और बाद में उनका उपयोग बैठक की कार्यवाही दिखाने के लिए किया जाता है,यदि आरोप गलत है तो समिति के पास उसे गलत साबित करने का सबसे आसान रास्ता है, बताइए—वार्षिक आमसभा कब हुई? बैठक की सूचना कब निकली? कितने दिन पहले सदस्यों को सूचना दी गई? सूचना की तालीलों का रिकॉर्ड कहाँ है? कितने किसान सदस्य पहुंचे? बैठक कितने बजे शुरू हुई और कितने बजे समाप्त हुई? कार्यवाही किसने लिखी? किस प्रस्ताव पर कितने सदस्यों ने सहमति दी? और उपस्थिति पंजी में दर्ज हस्ताक्षर उसी दिन हुए थे या पहले? यदि रिकॉर्ड व्यवस्थित है तो दस मिनट में सवाल समाप्त हो जाएगा। यदि रिकॉर्ड

बकत खाते का पैसा आखिर बकत के लिए था या ‘खर्च करो अभियान’ के लिए?

शिवप्रसादनगर समिति के बकत खाते से बड़ी रकम खर्च किए जाने को लेकर पहले से सवाल उठाए जा रहे हैं,आरोप करोड़ों रुपये तक के भुगतान और कथित संदिग्ध खर्च से जुड़ा है,यहां यह स्पष्ट करना जरूरी है कि केवल बैंक खाते से बड़ी राशि निकलना अपने आप भ्रष्टाचार साबित नहीं करता,असली प्रश्न है—राशि किस काम पर और किस दस्तावेज के आधार पर खर्च हुई? अगर भुगतान वैध है तो बिल होगा, मजदूरी है तो मजदूर और मस्टर होगा, वेतन है तो कर्मचारी,नियुक्ति आदेश और वेतन पत्रक होगा,खरीद है तो सामग्री और बिल होगा, परिवहन है तो वाहन,मात्रा और पर्ची होगी, किसी सेवा का भुगतान है तो उसका आदेश और कार्य का प्रमाण होगा,और यदि वार्षिक आमसभा हुई तो संस्था के सदस्यों के सामने वित्तीय विवरण रखने से संबंधित रिकॉर्ड भी होना चाहिए,यानी करोड़ों के सवाल का जवाब करोड़ शब्दों में नहीं चाहिए—कुछ मूल दस्तावेज पर्याप्त होंगे।

बहाली भी ‘श्रॉडिंगर की बिल्ली’ जैसी—प्रभारी के अनुसार हो गई, अधिकारी के अनुसार हुई ही नहीं!

इस पूरे मामले में एक दिलचस्प विरोधाभास और सामने आया है,बताया जा रहा है कि समिति प्रबंधक सोहराब की ओर से कहा जा रहा है कि संबंधित धान खरीदी प्रभारी की बहाली हो चुकी है,जबकि प्राधिकृत अधिकारी अथवा अन्य जिम्मेदार स्तर से बहाली नहीं होने की बात कही जा रही है,अब एक कर्मचारी एक ही समय में बहाल भी कैसे हो सकता है और बहाल नहीं भी? सहकारिता विभाग ने शायद नियुक्ति का कोई नया दर्शन विकसित नहीं किया होगा,सामान्य व्यवस्था में बहाली हुई है तो आदेश होगा, आदेश में क्रमांक होगा,तारीख होगी,सक्षम अधिकारी के हस्ताक्षर होंगे,कार्यभार ग्रहण करने का रिकॉर्ड होगा,यदि इनमें से कुछ नहीं है तो मौखिक बहाली का क्या अर्थ है? और यदि आदेश मौजूद है तो उसे सामने रख देने में समस्या क्या है? यहां बयान नहीं, केवल आदेश तय करंगा कि कौन सही बोल रहा है।

ही सवाल पैदा करे तो कहानी दूसरी होगी।

किसान धान लेकर आया,हमाली भी दी—फिर समिति ने किस हमाला को भुगतान किया?— हमाली राशि का सवाल शिवप्रसादनगर के मामले को सीधे किसानों की जेब तक ले जाता है,आरोप है कि व्यवहार में किसान धान लेकर आने पर चढ़ाई-उतराई अथवा अन्य मजदूरी का भुगतान स्वयं करता है, जबकि समिति के स्तर से भी हमाली-मजदूरी मद में भुगतान दर्शाए जाने के सवाल उठ रहे हैं, यदि ऐसा हुआ तो हिसाब बेहद सरल है,जिस तारीख की किसान ने धान बेचा, उस तारीख के मजदूर कौन थे? किसान ने किसे भुगतान किया? समिति ने किसे भुगतान किया? भुगतान नकद हुआ या खाते में? मजदूर की उपस्थिति कहां दर्ज है? क्या उसी काम के लिए दो स्रोतों से भुगतान हुआ? यदि किसानों ने भुगतान किया और समिति ने भी उसी काम के लिए भुगतान किया, तो यह जांच का विषय होगा। यदि दोनों भुगतान अलग-अलग कार्यों के लिए थे तो समिति रिकॉर्ड दिखाकर भ्रम दूर कर सकती है, हिसाब साफ है तो विवाद भी साफ हो जाएगा।

‘कुछ नहीं होगा’ का कॉन्फिडेंस कहीं पुरानी कार्रवाई के अनुभव से तो नहीं आया?— किसी व्यक्ति को कार्रवाई नहीं होने

का इतना भरोसा अचानक नहीं आता,इसलिए यह भी जांच का विषय है कि पूर्व की शिकायतों पर क्या हुआ,कितनी शिकायतें हुई? किस अधिकारी को भेजी गई? किस शिकायत पर जांच अधिकारी नियुक्त हुआ? किसने रिकॉर्ड मांगा? क्या जांच पूरी हुई? यदि हुई तो रिपोर्ट क्या थी? यदि नहीं हुई तो फाइल कहां अटक? अथवा अन्य मजदूरी का भुगतान स्वयं करता है, जबकि समिति के स्तर से भी हमाली-मजदूरी मद में भुगतान दर्शाए जाने के सवाल उठ रहे हैं, यदि ऐसा हुआ तो हिसाब बेहद सरल है,जिस तारीख की किसान ने धान बेचा, उस तारीख के मजदूर कौन थे? किसान ने किसे भुगतान किया? समिति ने किसे भुगतान किया? भुगतान नकद हुआ या खाते में? मजदूर की उपस्थिति कहां दर्ज है? क्या उसी काम के लिए दो स्रोतों से भुगतान हुआ? यदि किसानों ने भुगतान किया और समिति ने भी उसी काम के लिए भुगतान किया, तो यह जांच का विषय होगा। यदि दोनों भुगतान अलग-अलग कार्यों के लिए थे तो समिति रिकॉर्ड दिखाकर भ्रम दूर कर सकती है, हिसाब साफ है तो विवाद भी साफ हो जाएगा।

शिवप्रसादनगर मॉडल: पहले हस्ताक्षर, बाद में बैठक?— आरोपों के मुताबिक यदि किसानों के हस्ताक्षर धान खरीदी के दौरान पहले ही लिए जाते हैं और बाद में वार्षिक आमसभा की कार्यवाही के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं, तो यह पूरे प्रकरण का अत्यंत संवेदनशील हिस्सा है,इसकी जांच कठिन भी नहीं है,बैठक की तारीख और हस्ताक्षर करने वाले किसानों के बयान मिलाइए, दस-पंद्रह किसानों से पृष्ठि कि बैठक में गए थे

या नहीं, उनसे पृष्ठि कि किस विषय पर चर्चा हुई, वित्तीय विवरण पढ़कर सुनाया गया था या नहीं,समिति के खर्च की जानकारी मिली थी या नहीं,यदि सभी बताते हैं कि वे बैठक में उपस्थित थे,प्रक्रिया स्पष्ट थी और प्रस्तावों पर चर्चा हुई, तो आरोप कमजोर पड़ जाएगा, यदि किसान कहें कि हमसे तो धान बेचते समय हस्ताक्षर लिए गए थे,तब मामला अलग दिशा लेगा।

इतना बड़ा ‘कॉन्फिडेंस लेवल’ है तो रिकॉर्ड सार्वजनिक करने में भी उतना ही कॉन्फिडेंस दिखाइए—इस पूरे मामले का समाधान किसी तीखी बयानबाजी में नहीं है, जिन्हें विश्वास है कि सब कुछ सही हुआ, वे रिकॉर्ड सामने रखें,वार्षिक आमसभा की सूचना,उपस्थिति पंजी,कार्यवाही पंजी, कैशबुक, बकत खाते का स्टेटमेंट,हमाली भुगतान सूची,वेतन भुगतान,वाउचर,प्रस्ताव-उद्धारव,धान खरीदी प्रभारी की नियुक्ति अथवा बहाली का आदेश,और जिन खर्चों पर सवाल उठ रहे हैं उनके बिल, इसके बाद पता चल जाएगा कि कॉन्फिडेंस रिकॉर्ड का है या संरक्षण का।

अधिकारियों को पैसा देने का दावा करने वाले से पहले प्रमाण मांगिए, अधिकारियों को भी जवाब देना होगा— इस मामले में एक संतुलित जांच इसलिए भी जरूरी है क्योंकि ‘ऊपर तक पैसा पहुंचा दिया’ जैसे कथन केवल कथित भुगतानकर्ता पर सवाल नहीं उठाते,वे अधिकारियों की प्रतिष्ठा पर भी सीधा हमला करते हैं, इसलिए किसी अधिकारी को बिना प्रमाण ‘बिका हुआ’ कहना उचित नहीं होगा,लेकिन यदि किसी व्यक्ति ने वास्तव में अधिकारी को रिश्त देने का दावा किया है तो संबंधित अधिकारी के हित में भी उस दावे की जांच होनी चाहिए,क्योंकि या तो रिश्त देने वाला सच बोल रहा है—तो कार्रवाई बेहद गंभीर होनी चाहिए, या वह झूट बोलकर अधिकारियों के नाम का इस्तेमाल अपनी धाक जमाने के लिए कर रहा है—तो यह भी गंभीर मामला है, दोनों परिस्थितियों में चुप्पी सबसे खराब विकल्प है।

अगली धान खरीदी सिर पर—फिर वही जिम्मेदारी मिली तो पुराने सवालों का क्या होगा?— नई धान खरीदी का समय करीब आने के साथ शिवप्रसादनगर का मामला और महत्वपूर्ण हो जाता है, यदि पिछले सत्र के भुगतान,स्टॉक,हमाली,समिति खाते और प्रशासनिक निर्णयों पर सवाल लंबित हैं तो अगले सत्र में जिम्मेदारी तय करने से पहले रिकॉर्ड की समीक्षा आवश्यक होगी, वरना स्थिति विचित्र होगी—पुराने हिसाब पर जांच नहीं, नया हिसाब संभालने की जिम्मेदारी तैयार,

पुरानी शिकायत लंबित,नया सीजन शुरू,पुराने भुगतान सवालों में,नया पैसा खाते में,और फिर अगले साल वही सवाल—धान कितना आया, कितना गया और पैसा कहाँ गया?

महफिल का दावा सही निकला तो मामला शिवप्रसादनगर से कहीं बड़ा है— इस पूरी कहानी में सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा किसी एक व्यक्ति का नाम नहीं है, यदि महफिल में कही गई कथित बात केवल डींग है तो उसका पर्दाफाश होना चाहिए,लेकिन यदि कोई व्यक्ति सचमुच इसलिए निश्चित है कि शिकायत चाहे जितनी हो,वह कार्रवाई रोकवा सकता है, तो मामला एक धान खरीदी केंद्र से कहीं बड़ा हो जाता है,तब सवाल समिति प्रबंधन का नहीं,नियामक व्यवस्था की विश्वसनीयता का होगा,और यदि पैसे के बदले कार्रवाई प्रभावित करने का कोई प्रमाण मिलता है तो जांच उस स्तर तक जानी चाहिए जहां तक प्रमाण ले जाए—चाहे वह नीचे हो या ऊपर।

अब ‘धान’ के साथ ‘दावे’ की भी तौल जरूरी

शिवप्रसादनगर में धान तौलने के लिए कौंटा मौजूद है, अब जरूरत कथित दावों को भी उसी कठोरता से तौलने की है, ‘कुछ नहीं होगा’—किस आधार पर? ‘बहाली हो गई’—आदेश कहां है? ‘वार्षिक आमसभा हुई’—सूचना और कार्यवाही कहां है? हमाली का भुगतान हुआ—किस और किस काम का? ‘समिति का खर्च वैध है’—बिल-वाउचर कहां हैं? ‘ऊपर तक पैसा पहुंचा’ और कार्यवाही नहीं होती क्या यही इस प्रमाण है? इन सवालों में किसी को पहले से दोषी मानने की जरूरत नहीं,दस्तावेज निकालिए और दूध का दूध,पानी का पानी कर दीजिए,लेकिन यदि रिकॉर्ड मांगने पर रिकॉर्ड न मिले, बैठक पूछने पर तारीख न मिले,बहाली पूछने पर दो जवाब मिलें और कार्रवाई पूछने पर महफिल से जवाब आए कि ‘कुछ नहीं होगा’,तो व्यंग्य स्वयं नया लेता है,सहकारिता में शायद अब नया नारा लिखना बाकी है— ‘धान का एक-एक दाना तौला जाएगा,बस सवालों का वजन मत पूछिए!’ और शिवप्रसादनगर में सबसे बड़ा प्रश्न अभी भी वहीं खड़ा है इतना कॉन्फिडेंस आखिर किसका है—साफ रिकॉर्ड का, सिस्टम की कमजोरी का या किसी कथित संरक्षण का?

दृश्यम 3 के लिए मोहनलाल का अपूवल चाहते हैं अजय देवगन,फिर भी सुपरस्टार ने अब तक नहीं देखी फिल्म

अजय देवगन स्टार दृश्यम 3 की रिलीज को अब 1 ही दिन बचा है। कल यानी 2 अक्टूबर 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है। इस बीच अजय देवगन ने फिल्म से जुड़ी कुछ जानकारी साझा की और साथ ही ये भी बताया कि वह चाहते थे कि फिल्म रिलीज होने से पहले मोहनलाल जरूर ये फिल्म देख लें। दृश्यम फेंचाइजी की तीसरी और आखिरी फिल्म दृश्यम 3 को लेकर दर्शकों के बीच जबरदस्त बज बना हुआ है। एडवॉस बुकिंग में भी दृश्यम 3 का तगड़ा क्रेज देखने को मिल रहा है। अजय देवगन एक बार फिर विजय सलगांवकर की भूमिका में पर्दे पर लौट रहे हैं। अब तक इस फेंचाइजी की दो फिल्में रिलीज हो चुकी हैं और दर्शकों से दोनों को जबरदस्त रिसॉर्स मिला है। अब जब इस फेंचाइजी की तीसरी फिल्म रिलीज होने वाली है तो दर्शक ये जानने को बेताब हैं कि अब विजय सलगांवकर अपने परिवार की रक्षा कैसे करेंगे और आने वाली मुसीबत से परिवार को कैसे बचाएगा। मेकर्स पहले ही फिल्म को लेकर कई दावे कर चुके हैं। इस बीच अजय देवगन ने बताया कि उन्होंने दृश्यम 3 देखने के लिए मोहनलाल से संपर्क किया था और वह



चाहते हैं कि फिल्म की रिलीज से पहले वह उनकी फिल्म देखें।

अजय देवगन चाहते हैं दृश्यम 3 देखें मोहनलाल
अजय देवगन ने फिक्की फेम्स में बातचीत के दौरान बताया कि वह चाहते हैं कि मोहनलाल दृश्यम 3 जरूर देखें। दरआसल, मोहनलाल ने ही मूल दृश्यम फेंचाइजी में लीड रोल निभाया है, इसीलिए अजय देवगन के लिए मोहनलाल की राय और अप्रूवल मायने रखता है। अजय देवगन के बताया कि वह चाहते थे कि मोहनलाल ये

फिल्म जरूर देखें, इसके लिए उन्होंने मोहनलाल से संपर्क भी किया था। लेकिन, उस वक्त मोहनलाल छुट्टी पर थे, जिसके चलते वह फिल्म नहीं देख पाए। उन्होंने बताया कि अवसर उनकी और मोहनलाल की बातचीत होती रहती है और उन्हें उम्मीद है कि जल्दी ही वह ये फिल्म देख सकते हैं।

क्या बोले अजय देवगन?
अजय देवगन ने मोहनलाल से फिल्म को लेकर हुई बातचीत के बारे में बताते हुए कहा- मैंने लाल (मोहनलाल) सर को

कॉल किया था,क्योंकि मैं चाहता हूं कि वह ये फिल्म देखें। जैसा कि आलोक जैन ने कहा कि वह बहुत अच्छा काम करते हैं और इस बार हमने बिल्कुल अलग रास्ता अपनाया है। इसलिए, मुझे लगता है कि अगर दृश्यम 3 को उनकी मंजूरी मिल जाए तो अच्छा होगा। मैं तब दिल से चाहता हूं कि वो ये फिल्म देखें, लेकिन वो छुट्टी पर हैं। ये बहुत अच्छी बात है कि वह लगातार बातचीत करते रहे हैं और मुझे लगता है कि वह जल्दी ही वहां ये फिल्म देखेंगे।

चार स्क्रिप्ट हुईं रिजेक्ट
अजय देवगन ने इसी दौरान बताया कि चार स्क्रिप्ट रिजेक्ट करने के बाद दृश्यम 3 के लिए स्क्रिप्ट चुनी गई थी, जिसमें फेंचाइजी के मुताबिक दिवस्ट और टर्नस हैं। अजय देवगन ने कहा कि सस्पेंस और थ्रिलर फिल्मों की स्क्रिप्ट लिखना बहुत ही मुश्किल होता है। अभिनेता कहते हैं-इस फेंचाइजी को हम एक बड़े मुकाम पर खत्म करना चाहते हैं। हाल ही में मैंने पूरी फिल्म देखी और व्यक्तिगत तौर पर मेरा मानना है कि दृश्यम 3, दृश्यम 2 से भी बेहतर बनी है। इसलिए इसे यहीं पर खत्म करना बेहतर फैसला है।

दिनेश विजन ने स्त्री 3 की रिलीज डेट से उठाया पर्दा,महावतार के बाद आएगी हॉरर-कॉमेडी?

दिनेश विजन ने स्त्री 3 की रिलीज डेट का खुलासा किया है। यह फिल्म निर्देशक अमर कौशिक की महावतार पूरी होने के बाद रिलीज होगी। राजकुमार राव इन दिनों अपनी फिल्म प्रहार के प्रमोशन में व्यस्त हैं। इसका ट्रेलर 29



सितंबर को रिलीज किया गया। ये एक बायोग्राफिकल कोर्टरूम ड्रामा-ड्रामा फिल्म है जिसमें उन्होंने उज्ज्व निकम का किरदार निभाया है। उज्ज्व निकम वहीं वकील हैं जिन्होंने 26/11 हमले में जिंदा पकड़े गए आतंकवादी अजमल कसाब के खिलाफ सरकार की तरफ से केस लड़ा था। उन्होंने ही कसाब को उसके गुनाहों के लिए फांसी की सजा तक पहुंचाने में सबसे मुख्य कानूनी भूमिका निभाई थी।

कब आएगी स्त्री 3
अब हाल ही में एक्टर एफसीसीआई फेम्स 2026 के एक कार्यक्रम में सम्मिलित हुए जहां उन्होंने अपनी स्त्री फिल्म को लेकर भी अपडेट दिया। एक्टर ने बताया कि कैसे यह हॉरर-कॉमेडी फिल्म काफी कम बजट में बनी थी। डायरेक्टर अमर कौशिक खुद बॉक्स-ऑफिस पर फिल्म का शानदार प्रदर्शन देखकर हैरान रह गए थे। प्रोड्यूसर दिनेश विजान ने स्त्री 3 की रिलीज की टाइमलाइन का ऐलान किया और बताया कि इस फेंचाइजी की मच अवेंटेड तीसरी किस्त 2028 में आएगी।

महावतार के बाद होगी रिलीज
स्त्री फेंचाइजी के बारे में बात करते हुए दिनेश विजान ने कहा,अमर कौशिक स्त्री और पूरी हॉरर फेंचाइजी का सबसे अहम हिस्सा हैं। कौशिक के आने वाले प्रोजेक्ट्स के बारे में बात करते हुए दिनेश ने आगे कहा,वह जनवरी के आखिर में हमारी सबसे महत्वाकांक्षी फिल्मों में से एक को डायरेक्ट करेंगे, जो भगवान परशुराम की कहानी है और जिसका नाम महावतार है।दिनेश ने बताया कि अमर कौशिक के जून 2027 तक महावतार का काम पूरा करने की उम्मीद है। इसके बाद वह स्त्री 3 पर काम शुरू करेंगे। रिलीज की टाइमलाइन बताते हुए दिनेश ने कहा,तो, स्त्री 3 2028 में आएगी। शायद कोई एक स्वतंत्रता दिवस या क्रिसमस पर दिनेज विजन ने मूवी के बारे में इससे ज्यादा अपडेट शेयर करने से मना कर दिया लेकिन ऑडियंस से वादा किया कि उन्हें इसमें तगड़ा सरप्राइज जरूर देखने को मिलेगा।



महेश बाबू ने फहद फासिल को बताया शानदार अभिनेता

डायरेक्टर शशांक येलेटी की आने वाली फैंटेसी एंटरटेनर फिल्म डोंट ट्रबल द ट्रबल में बेहतरीन काम के लिए एक्टर फहद फासिल की तारीफ करते हुए, तेलुगु स्टार महेश बाबू ने बुधवार को फहद फासिल को एक जबरदस्त एक्टर बताया। महेश बाबू ने अपने ड्र (टिवर) अकाउंट पर फिल्म और उसके शानदार अनुभव के बारे में एक लंबी पोस्ट लिखी। उन्होंने लिखा, अभी-अभी फिल्म देखी!!! यह कितना शानदार और पूरा अनुभव है। कितनी अच्छी तरह से बनाई गई और खुशनुमा फिल्म है...यह पूरी तरह से मनोरंजक होने के साथ-साथ दिल को छू लेने वाली भी है। फिल्म में शुरू से आखिर तक एक अनोखा अपनापन और गर्मजोशी चहसूस होती है! इसके बाद उन्होंने फिल्म के लीड एक्टरस - फहद फासिल और चाइल्ड आर्टिस्ट सारा - की तारीफ की। उन्होंने लिखा, फहद सर-आप एक जबरदस्त एक्टर हैं। आपको खुद को बेहतर बनाने, नए प्रयोग करते और खुद को नए सिरे से गढ़ते हुए देखना वाकई प्रेरणादायक है। फहद सर और हमारी प्यारी सी सारा की जोड़ी कमाल की है! आप देख सकते हैं कि किरदार हर पल जी रहे हैं, सांस ले रहे हैं और महसूस कर रहे हैं!!! महेश बाबू ने फिल्म के प्रोड्यूसर एस एस कार्तिकेय से कहा, कार्त - इससे बेहतर शुरुआत की उम्मीद नहीं की जा सकती थी। इस फिल्म में आपने जो कुछ भी लगाया है,उसके बाद अब आप चैन की सांस ले सकते हैं। आपने और शोबू ने वाकई कुछ खास बनाया है और मैं आप दोनों के लिए बहुत खुश हूँ। शशांक, आपने बहुत बर्बदा काम किया है। जिस तरह से आपने इस खूबसूरत दुनिया को एक साथ पेश किया है, वह वाकई तारीफ के काबिल है...

खेल-समाचार



बांग्लादेश को हराकर पाकिस्तान फ़ाइनल में पहुँचा

निशन,01 अक्टूबर 2026। गुरुवार को कोरोगी स्पोर्ट्स पार्क में खेले गए एक छोटे किए गए सेमीफाइनल मैच में पाकिस्तान ने बांग्लादेश को हराया। पाकिस्तान ने 11.3 ओवर में 112 रन का लक्ष्य छह विकेट बाकी रहते हुए हासिल कर लिया। हालांकि मौसम साफ था, लेकिन लगातार बारिश के कारण आउटफील्ड गीली और कीचड़ वाली हो गई थी, जिससे टॉस और खेल शुरू होने में देरी हुई। बारिश की वजह से टूर्नामेंट के सभी चार क्वार्टर फ़ाइनल मैच रद्द हो गए थे।

माकशीट गुप्त सूचना

मैं नीता निवासी ग्राम बकना जिला सूरजपुर अपने घर से अंबिकापुर आ रही थी कि रास्ते में मेरा जी एन एन तृतीय वर्ष की माकशीट रोल नंबर 40179 न्यू लाइफ इस्टिड्यूट ऑफ नर्सिंग बैक्यूपुर कोरिया से की थी जो कहीं गिर गई काफी खोजबीन के बाद भी नहीं मिल रही है जिस किसी सज्जन को मिले कृपया इस पते पर संपर्क करें

नीता
ग्राम बकना
पोस्ट तिवरागुडी
जिला सूरजपुर छत्तीसगढ़
मोबाइल नंबर 9098 748 458

मलेशिया दौरे के लिए भारत की 23 सदस्यीय टीम घोषित

नई दिल्ली,01 अक्टूबर 2026। भारतीय अंडर-17 महिला फुटबॉल टीम के मुख्य कोच जोआकिम एलेक्जेंडरसन ने एएफ सी यू- 17 महिला एशियन कप चीन 2027 क्वालिफायर के लिए 23 सदस्यीय टीम की घोषणा कर दी है। क्वालिफायर मुकाबले 5 से 11 अक्टूबर 2026 तक मलेशिया में खेले जाएंगे। भारतीय टीम को रफू श्व में इराक, सीरिया और मेजबान मलेशिया के साथ रखा गया है। टीम 2

अक्टूबर को कुआलालंपुर पहुंचेगी और इसके बाद अंतिम तैयारियों में जुट जाएगी। 'यंग टाइग्रेस' के नाम से पहचानी जाने वाली भारतीय टीम के सामने इस बार एक खास उपलब्धि हासिल करने का मौका है। मौजूदा 23 सदस्यीय टीम में पिछली प्रतियोगिता में खेल चुकीं 11 खिलाड़ियों को फिर जगह मिली है। भारत का लक्ष्य पहली बार लगातार दो,स्रष्ट 17 महिला एशियन कप के लिए क्वालिफाई करना होगा।

न्यायालय नज़ूल अधिकारी अम्बिकापुर,जिला-सरगुजा.	
रा.प्र.क्र./अ- 20(31)/2025-26	
ईश्रतहार	
एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है, कि आवेदक आदित्य सिंह देव आ0 मार्तण्ड सिंह देव, जाति क्षत्रिय, निवासी रिंग रोड रामानुजगंज चौक अम्बिकापुर, जिला सरगुजा, छ0ग0 के द्वारा अपने स्वामित्व की शीट नम्बर-04 मोहल्ल-बौरीपारा, नगर अम्बिकापुर स्थित नज़ूल प्लाट नम्बर 2033 2034/1 रकबा 0.02, 0.19 एकड़ में से रकबा 0.04 ^{1/2} एकड़ भूमि को अनावेदक/ केता मनोज कुमार सिंह आ0 देवराज सिंह, जाति क्षत्रिय, निवासी नमनाकला, तहसील अम्बिकापुर, जिला सरगुजा छ0ग0 के पास बिक्रय करने की अनापत्ति प्रमाण पत्र हेतु मेन्टेनेस खसरा छायाप्रति सहित आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है।	
उक्त भू-खण्ड के संबंध में यदि किसी व्यक्ति अथवा संस्था को कोई दावा अथवा आपत्ति हो तो अपना लिखित दावा-आपत्ति स्वयं अथवा अपने अधिवक्ता के माध्यम से दिनांक 05.10.2026 तक इस न्यायालय में प्रस्तुत कर सकते हैं। नियत समय-सीमा के बाद प्राप्त दावा-आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।	
आज दिनांक- 28/09/2026	
को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालयीन पदमुद्रा से जारी ।	
 नज़ूल अधिकारी ,अंबिकापुर	

न्यायालय तहसीलदार अम्बिकापुर,जिला-सरगुजा,छ0ग0	
रा0प्र0क्र0/-ब -121/2025-26	
ईश्रतहार	
एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक आवेदक अमित साना आ. स्व. हजारीलाल साना, निवासी ग्राम सुभाषनगर, तहसील अम्बिकापुर, जिला सरगुजा छ.ग. के द्वारा ग्राम सुभाषनगर स्थित खसरा नंबर 256 रकबा 0.100 हे. भूमि के राजस्व अभिलेखों में हुये त्रुटि को सुधार किये जाने हेतु आवेदन पत्र अनुविभागीय अधिकारी महोदय, अम्बिकापुर के समक्ष में प्रस्तुत किया गया है, जो जीच प्रतिवेदन हेतु इस न्यायालय को प्राप्त हुआ है । उक्त संबंध में यदि किसी व्यक्ति अथवा संस्था को कोई आपत्ति हो तो सुनवाई दिनांक 23/10/2026 के पूर्व स्वयं अथवा अपने प्रतिनिधि अथवा अधिष्ठाक के माध्यम से इस न्यायालय में उपस्थित होकर अपना दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर - सकते है। समय-सीमा के बाद प्राप्त दावा-आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।	
आज दिनांक- 28/09/2026	
को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालयीन पदमुद्रा से जारी ।	
 तहसीलदार अंबिकापुर,सरगुजा	

न्यायालय तहसीलदार अम्बिकापुर,जिला-सरगुजा,छ0ग0	
ईश्रतहार	
एतद द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक भण्डुक्त आ0. स्व. जगेश्वर निवासी मेनुङ्कल्ला,थाना-अम्बिकापुर तहसील ने कराया है कि आवेदक के पिता जगेश्वर आ0 स्व0 जकेश्वर की दिनांक 13/03/2023 में हुई है ।	
आवेदक के मृत्यु उपरांत मृत्यु का पंजीयक नहीं कराया गया है । अतः प्रमाण पत्र की आवश्यकता होने पर यह आवेदन पेश किया गया है।	
उक्त संबंध में यदि किसी को कोई आपत्ति हो तो ईश्रतहार प्रकाशन से 15 दिवस तक न्यायालय में उपस्थित होकर अपना दावा / आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। समय-सीमा के बाद प्राप्त आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा ।	
आज दिनांक 30/09/2026 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालयीन मुदा से जारी	
 तहसीलदार अंबिकापुर,सरगुजा	



एशियन गेम्स: भारतीय पुरुष हॉकी टीम फाइनल में

काकामिगहारा,01 अक्टूबर 2026। गुरुवार को गिफू प्रीफेक्चुरल ग्रीन स्टेडियम में खेले गए एशियन गेम्स 2026 के पुरुष हॉकी सेमीफाइनल में भारत ने अपने कष्ट प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान को 4-3 से हराया। पाकिस्तान ने मैच के आखिर में जबरदस्त वापसी की कोशिश की, लेकिन भारत ने संयम बनाए रखा और फाइनल में जाह पक्की कर ली। मौजूदा चौपियन ने अब एक और मेडल पक़ा कर लिया है और लॉस एंजिल्स 2028 ओलंपिक के लिए टिकट हासिल करने से बस एक जीत दूर है।

छत्तीसगढ़ शासन, जल संसाधन विभाग				
कार्यालय कार्यपालन अभियंता,जल संसाधन संभाग क्र. 2,रामानुजगंज जिला-बलरामपुर-रामानुजगंज(छ0ग0)				
ई-प्रोक्युरमेंट निविदा सूचना				
eProcurement Portal: https://eproc.cgstate.gov.in				
निम्नलिखित कार्यों के लिये दिनांक 15.10.2026, (17.30 बजे) तक ऑनलाईन निविदाई आमंत्रित की जाती है।				
सिस्टम निविदा क्रमांक	निविदा सूचना क्रमांक एवं दिनांक	कार्य का नाम	निविदा की लागत जी.एस.टी.छोड़कर (लाख में)	आमंत्रण का क्रमांक
199849	06/ब.ले. लि / 2026-27 दिनांक 24.09.2026	खटवारदर व्यपवर्तन योजना अंतर्गत बीयर, अमलक्स बंड एवं एगोच रोड सहित शीर्ष कार्य का निर्माण कार्य ।	760.04	प्रथम आमंत्रण
अन्य विवरण एवं विस्तृत निविदा छत्तीसगढ़ शासन की ई-प्रोक्योरमेंट वेब साइट https://eproc.cgstate.gov.in पर दिनांक 01.10.2026, समय 17.31 बजे से देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते है।				
नोट : 1. निविदा में भाग लेने हेतु ठेकेदारों को ई-प्रोक्योरमेंट वेबसाइट https://eproc.cgstate.gov.in पर नामांकित/पंजीयन तथा लोक निर्माण विभाग की एकीकृत पंजीयन प्रणाली के अंतर्गत ठेकेदार को उयुक्त श्रेणी में पंजीयन कराना अनिवार्य है।				
2. निविदा की अनुमानित लागत एच.ओ.आर. दिनांक 01.05.2025 एवं दिनांक 08.08.2025 के जारी संशोधन के अनुसार है।				
कार्यापालन अभियंता				
जल संसाधन संभाग क्र. 2, रामानुजगंज जिला बलरामपुर-रामानुजगंज (छ.ग.)				
कृते मुख्य अभियंता				
हसदेव गंगा कछहर, जल संसाधन विभाग अंबिकापुर, सरगुजा (छत्तीसगढ़.)				
जी नंबर- 262703617/1				

बिग बॉस 20 से अचानक बाहर हुई रीति तिवारी,उदिति सिंह,माही विज और यंग डीएस ने मिलकर बिगाड़ा खेल

बिग बॉस 20 में बड़ा दिवस्ट देखने को मिला। रहित तिवारी मिड-वीक एक्विक्शन में घर से बाहर हो गई। उदिति सिंह,माही विज और यंग डीएसए के फैसले से उनकी जर्नी खत्म हुई। बिग बॉस 20 के घर में कब क्या हो जाए, इसका अंदाजा लगाना मुश्किल है। शो में कंटेस्टेंट्स की रणनीति और रिश्तों के बीच हर दिन नए दिवस्ट देखने को मिल रहे हैं। अब मेकर्स ने दर्शकों को एक और बड़ा



सरप्राइज दिया है। शो में मिड-वीक एक्विक्शन हुआ, जिसमें रीति तिवारी का सफर अचानक खत्म हो गया। घर से बाहर निकलने वाली रहित इस सीजन की पहली मिड-वीक एक्विक्टेड कंटेस्टेंट बनी हैं। उनका एक्विक्शन ऐसे समय हुआ, जब वह शो के जरिए अपने सपनों को पूरा करने की कोशिश कर रही थीं। **रॉकस्टार बनने का सपना रह गया अधूरा**
रीति तिवारी ने बिग बॉस 20 में अपने लिए एक अलग पहचान बनाने की कोशिश की थी। शो में आने के पीछे उनका सपना खुद को एक

रॉकस्टार के तौर पर स्थापित करना भी था। हालांकि उनका सफर उम्मीद के मुताबिक लंबा नहीं चल सका। मिड-वीक एक्विक्शन ने उनके इस सफर को अचानक रोक दिया। रीति का एक्विक्शन इसलिए भी खास रहा, क्योंकि आमतौर पर दर्शक वीकेड पर होने वाले एक्विक्शन के लिए तैयार रहते हैं,लेकिन इस बार घर के अंदर ही हुए एक फैसले ने उनकी जर्नी खत्म कर दी। इससे बाकी कंटेस्टेंट्स के लिए भी साफ हो गया कि

गेम में किसी भी वक्त समीकरण बदल सकते हैं। **रीति के बाद कौन-कौन हुआ बाहर?**
बिग बॉस 20 में रीति तिवारी का एक्विक्शन सीजन के शुरुआती दौर में हुआ। उनसे पहले ईशा रिखी को घर से बाहर किया गया था। ईशा के बाद रहित से पहले रोहद खान को भी शो छोड़ना पड़ा था। इस तरह शुरुआती हफ्तों में ही कई कंटेस्टेंट्स की जर्नी खत्म हो चुकी है। बता दे, बीते एक एपिसोड में निरहुआ संग अपनी बॉन्ड पर आभ्रपाली ने बात की थी।



जब सिरफिरे घरवालों से होगा परफेक्ट बहू का सामना,अवस्थी परिवार में मचेगा हड़कंप

यामी गौतम की आगामी फिल्म नई नवेली का ट्रेलर जारी हो गया है,जिसमें वह अवस्थी परिवार की परफेक्ट बहू मोहिनी के रहस्यमय किरदार में हैं। यामी गौतम की नेक्सट रिलीज नई नवेली को लेकर फैस के मन में एक अलग गी क्रेज है। टीजर ने इस उत्सुकता को और बढ़ा दिया था। अब फाइनली एमेजन एमजीएम स्टूडियोद और कलर येलो ने इसका ट्रेलर भी लॉन्च कर दिया।इस फिल्म में दर्शक देखेंगे कि किस तरह कि क्या भाभी वाकई खयन है या फिर वो किसी अदृश्य शक्ति से घरवालों की रक्षा कर रही है। फिल्म में भाभी मोहिनी का किरदार यामी गौतम ने निभाया है।

फैमिली एंटरटेनर मूवी है नई नवेली

ये फिल्म एक आदर्श बहू,एक अतरंगी परिवार और एक ऐसे राज की कहानी है,जो घर की दहलीज पार कर कोसों दूर तक जाती है। बालाजी मोहन के निर्देशन में बनी और हिमांशु शर्मा और दिव्य निधि शर्मा द्वारा लिखी नई नवेली की कहानी मेरठ पर आधारित है,जो भारत की अपनी फैटेसी फैमिली-एंटरटेनर फिल्म है। यह फ़िल्म जबरदस्त हंसी-मजाक, पारिवारिक उथल-पुथल,अनसुलझे रहस्यों और धमाकेदार एक्शन को ऐसी जुगलबंदी है,जो पर्दे पर जब उतरती है तो दर्शक पेट पकड़कर हंसने के लिए मजबूर हो जाते हैं।

क्या है नई नवेली की कहानी?

फिल्म का ट्रेलर दर्शकों को अवस्थी परिवार की दुनिया में ले जाता है,जहां परिवार की नई बहू,मोहिनी के आने के बाद ऐसे कई सवाल सामने आते हैं,जिनका कोई जवाब नहीं है। एक सामान्य भारतीय परिवार के जाने-पहचाने माहौल में रंग-बिरंगे किरदार,उन सबकी अलग-अलग राय और शादी की तमाम रस्मों से शुरू होने वाला सिलसिला धीरे-धीरे दर्शकों की सोच से परे और हैरान करने वाली दुनिया के दरवाजे खोल देता है। यामी गौतम धर इस फिल्म की सबसे अहम कड़ी हैं और नई नवेली का ट्रेलर भी दर्शकों के मन में आगे की कहानी जानने की इच्छा जगाता है। दशहरे के मौके पर रिलीज होने वाली इस फिल्म की कहानी बिल्कुल अलग है जो दर्शकों का भरपूर मनोरंजन करेगी। आप इसे 16 अक्टूबर को अपने नजदीकी सिनेमाघरों में देख सकते हैं।

नाम परिवर्तन सूचना

मैं सुशील कुमार आ. राम दुलार उम्र लगभग 34 वर्ष, निवासी ग्राम करेयां थाना व तह. दरिया जिला सरगुजा छ.ग. मैं उपरोक्त पते का निवासी हूं। यह कि मेरे पुत्र का पुराना नाम लकी है और मैं अपने पुत्र का नाम बदलकर नया नाम अंकित रजक करवाना चाहता हूं। मेरे पुत्र के पुराने नाम से किसी भी न्यायालय में ई भी प्रकरण लबित नहीं है और न ही किसी बैंक में ऋण की राशि शेष है । मैं अपने पुत्र का नाम बदलकर यदि कोई गैर कानूनी काम करता हूं तो मैं उसके स्वयं जिम्मेदार रहूंगा ।

मैंने शपथ पत्र अपने होशो हवास में हस्ताक्षर कर सक्षम अधिकारी के समक्ष प्रस्तुत किया है।

समथकर्ता
सुशील कुमार

CMYK